8/39 B

॥ श्री श्री गौरांगविधु र्जयति ॥

1·3

8/39 B

श्रीरामहरिग्रन्थावली

बुधिविलास १ सतह सी २ वोधबावनी ३ रसपचीसी ४
लघुनामावली ५ लघुशब्दावली ६
प्रेमपत्री ७ ध्यानरहसि ८

श्री श्री रामहरिजी कृता

सं० २००८ महाप्रभुजयन्ती
फाल्गुन पूर्णिमा।
प्रथमावृत्तिः १०००
न्यौछावर ।-)

प्रकाशक—
बाबा कृष्णदास.
कुसुमसरोवर ।

सर्वाधिकारसुरक्षित है।

—[समर्पण पत्रम्]—

श्री श्री राधारमण चरणदास देवस्यानुचर प्रवरस्य,
सकल देश प्रसिद्ध कीर्त्तिराशेः, प्रेम मात्र सर्व्वस्व
कृतस्य, निरन्तर सात्विक भावावल्या
विभूषितस्य, दी न ता सा ग र स्य,
मधुर स्वरालापैः सर्वदा गौर
कीर्त्तनकर्त्तुः, श्रीरामदासेति
नाम्ना प्रसिद्धस्य, मदीय
आराध्यदेवस्य, श्रीगुरु
देवस्य, बाबाजीमहा-
राजस्य प्रीत्यर्थे
समर्पितेदं ग्रन्थरत्नं ।

★

8139 B

दो शब्द

भज–निताई गौर राधेश्याम।
जप–हरे कृष्ण हरे राम॥

आज हम गुरु गौरांग की पुनीत कृपा से इस रामहरी ग्रन्थावली को प्रकाशित कर रसिक प्रेमीजनों के समक्ष रखने में समर्थ हुए। इसमें क्रम से बुधिविलास, सतहंसी, बोधबावनी, रसपचीसी, लघुनामावली, लघुशब्दावली, प्रेमपत्री, बारहखड़ी-ककौ संचित किये गये हैं। बुधिविलास में भक्ति प्रेम सम्बन्धी यथेष्ट उपदेश और नीति हैं। जिस प्रकार कवीर प्रभृति महात्माओं की साखी प्रसिद्ध हैं ठीक उसी प्रकार यह रामहरी जी की साखी भी बहुत ऊँची वस्तु करके मानी जाती है। इसमें विशेषता यह है कि विशुद्ध प्रेम, विरह का इनमें यथेष्ट सरस वर्णन है। इसमें २५५ दोहे मौजूद हैं। इन दोहें को यदि कोई कंठस्थ कर लेवे तो बस उसका बेड़ा पार है। वह भक्ति, प्रेम, विरह का सूक्ष्म विचार संक्षेप से जान सकता है। दूसरी सतहंसी १०२ दोहे में रची गई है। इसमें यमक का खूब कूट विचार है। इसलिये यह कठिन हो गई है। यमक काव्य रचना की परिपाटी इससे सब कोई सीख सकता है। यद्यपि यमक परिपाटी के कारण अर्थ समझने में कठिन हो गया है तो भी यमक छटा की घन छटा देखकर हम आश्चर्य में हो जाते हैं। बोधबावनी में ५४ दोहे हैं। इसमें कुछ उपदेश मौजूद हैं। रसपचीसी में नायक नायिका के अंग सम्बन्धी कुछ गुणों का विचार है। लघुनामावली में १०२ दोहे हैं। जिसमें अमरकोस, धनञ्जयकोस, नन्ददास की नामावली प्रभृति देखकर ब्रजभाषा में अति

सुन्दर निराली कोष रचना की गई है। लघुशब्दावली में भी शब्दों के अर्थ की सुन्दर रचना है। अमरकोषादिक में विरक्त यदि कोई इन दोनों कोष ग्रन्थ को सीख लें तो वह भाषा जगत में कोषज्ञ हो सकता है। लघुशब्दावली में १०० दोहे हैं। प्रेम-पत्री भी एक पत्रात्मक सुन्दर वस्तु है। विरह विधुरा श्री ब्रज-गोपियाँ श्री कृष्ण के लिये मथुरा नगरी में पत्र दे रहीं हैं। बारहखड़ी ककौ भी एक आस्वादनीय वस्तु है। प्रस्तुत वाणी-कार श्री रामहरी के विषय में हमें कोई ज्ञात नहीं है। इनके ग्रन्थों में केवल इतना उपलब्ध है कि वे श्रीगोपालभट्ट गोस्वामी घरान (परिकर) में श्री राधारमणजी के सेवक हुए। वे अपने प्रत्येक ग्रन्थ में निज उपास्य देव श्री शचीनन्दन गौरहरि के मंगलाचरण रूप वन्दना देते हैं। भक्तमाल टीकाकार प्रियादास जी के पौत्र रसजानि वैष्णवदास जी के समसामयिक तथा उन्हीं के कृपा बल से बली होकर एतादृश काव्य रचना में वे समर्थ हुए हैं। परिशेष में "श्रीमान् नन्दकिशोर मुकुट वाले लोई बाजार वृन्दावन और बाबा श्रीवंशीदास जी महाराज के हम आभारी हैं कि आप दोनों ने इस ग्रन्थ समूह को प्रकाशित करने के लिये हमें प्रदान किया। इनमें से बारहखड़ी ककौ वृन्दावन निवासी गोस्वामी रासविहारी शास्त्री जी से प्राप्त हुई थी।

इतिशं—

विनीत—

कृष्णदास प्रकाशक।

❀ श्री राधारमणचंद्रो जयति ❀

8139 B

॥ अथ ग्रन्थ बुधिबिलास लिख्यते ॥

दोहा—प्रणवहु श्री राधारमण सचीसून गुरुदेव।
हरिजन जमुना पुलिन ब्रज रामहरी के सेव ॥ १ ॥
कज्जल नग सब उदधि मसि लेखन सुरकाँतार।
रसा पत्र गो लिखतऊ रामहरी नहिं पार ॥ २ ॥
लघु दोहा सब कविन के रामहरी लिख लीन।
हितरस नेह समुद्र है पैरि न पाऊँ दीन ॥ ३ ॥
रामहरी सुध प्रीत में घन विच पारै रौर।
धर्मपुत्र हूँ कही है रहत नाहिं मन ठौर ॥ ४ ॥
लैन दैन कीरति भई रामहरी ते टूट।
नन्दकुंवर सौं प्रीति करि बसि ब्रज ए सुख लूट ॥ ५ ॥
कृष्णचंद्र कौ ध्यान धरि कृष्णहि के गुण गाइ।
रामहरी भजि कृष्ण को कृष्णहि सदा सहाइ ॥ ६ ॥
प्यारो जानूं कृष्ण कूं मित्र जानि घनस्याम।
रामहरी जग एक है सुन्दर गिरधर नाम ॥ ७ ॥
जमला इह जग सुख नहीं किये जु बहुतै मित्त।
जिहि सुख वंध्या एक सौं सो सोवै सुख नित्त ॥ ८ ॥
मित्र बराबर सुख नहीं तीन लोक मैं कोइ।
जैसो चाहै चोप सौं जो वैसौ चित होइ ॥ ९ ॥
संमन जासों मन मिलै कहा रंक कहा राव।
हेमक पूरन राचही मिलैं सुहागै ताव ॥ १० ॥
देखो चतुर विचार कै इहै लगन की रीति।
जाको जासों मन मिलै सो नहिं छांड़त प्रीति ॥ ११ ॥
समुद निरें गिरि तें गिरें सीसहि करवत लेउ।
एक प्रेम के कारनें कोटि बारि जिय देउ ॥ १२ ॥

धन दै के तन राखियै तन दै राखौ लाज।
लाज प्राण धन दीजिये एक प्रीति के काज ॥ १३ ॥
नेह निवाहे ही बनैं सोचें बनै न आन।
तन दे मन दे सीस दे प्रीति न दीजैं जान ॥ १४ ॥
छांड़ै चौकस चतुरई आड़ै सकल निवारि।
प्रीतम वस चाहे कियौ प्रीतम प्रीति विचारि ॥ १५ ॥
मीत मिताई जानियै संपति विपति सहाय।
आगें पीछे एक सो मीत बखान्यौ जाय ॥ १६ ॥
राजगर्व जोवन सुखद अरु अनेक सुख चित्त।
ए सब न्यौंछावरि करौ तापर प्रेम सुवित्त ॥ १७ ॥
सुख साधन संजम सकल संमन सकै अकथ्य।
चित्त चहूटयौ मित्त सौं जीव भयौ पर हथ्य ॥ १८ ॥
उजियारी प्यारी बनी शशि तें सुन्दर जोति।
जा दिन तें यारी भई न्यारी नेंक न होति ॥ १९ ॥
लगन लगा लोगनि लखी प्रगटी प्रीति निदान।
लगन अगिन तन तूल में क्यों करि दुरत कल्यान ॥२०॥
प्रीति दुराई ना दुरै उत्तम मन की लागि।
ज्यों जुग भरि जल में रहै मिटै न चकमक आगि ॥ २१ ॥
रमि मूरति मन में रही प्रीतम की यह भाय।
जैसे आंक अकार सों न्यारौ कह्यौ न जाय ॥ २२ ॥
कमल नाल सज्जन हियौ अँग अँग रह्यो समाय।
खंड खंड करि काटिए ताँतू तऊ न जाय ॥ २३ ॥
संमन तन भय प्राण वस प्राण भयौ वस चित्त।
चित्त भयौ वस प्रेम के प्रेम भयौ वस मित्त ॥ २४ ॥
जा दिन पिया न देखिये भिटिये ना भरि हेत।
सो दिन लेखें आवकें विधि का है लिख लेत ॥ २५ ॥

लैं बैकुण्ठहि कहा करों कल्पवृक्ष की छांह।
ग्रीषम ढाक सुहावने ज्यौं प्रीतम गल बांह॥ २६॥
नैंन लगे ते जान ही और न जानत कोइ।
रामहरी ए नेहरा सुधि बुधि देवै खोइ॥ २७॥
मोहन बात सनेह की कहन सुनन की नांहि।
सो सुख देखत ही बनै जो वीतै दुहु मांहि॥ २८॥
मित्रहि द्वै गुन चाहिये होंहि कोटि दश दोस।
हित तो पाहन रेख सम वीज चमंका रोस॥ २९॥
प्रगट करत को नन नहीं अपने मन कौ नेह।
तासों दश गुण करत हैं होत चतुर नर जेह॥ ३०॥
सज्जन येहा चाहिये जे हातर वर ताल।
फल वांछित पानी पिवत नांहि न करत जमाल॥ ३१॥
सज्जन येहा चाहिये जेहा आको दुद्ध।
औगुनऊ पर गुण करै संमन ते कुल सुद्ध॥ ३२॥
सज्जन ऐसा कीजिये जैसी निशि अरु चंद।
चंद विना निशि अंधली निशि बिन चंदा मंद॥ ३३॥
संमन ऐसी प्रीति करि जैसी करी मयंक।
जगत कलंकी कहि रह्यौ तऊ न तज्यौ कलंक॥ ३४॥
उत्तम संगति मल्ल कहि प्रीति रहै ठहराय।
नीच नेह अरु खर सवद घटत घटत घटि जाय॥ ३५॥
सज्जन प्रीति मजीठ रंग साध वचन प्रति पाल।
पाहन रेखा करम गति क्योंहु न मिटत जमाल॥ ३६॥
तजत प्रकृति नहिं महत जन संपति विपति समान।
उदय अस्त अनुराग मुख भान मान जिय जान॥ ३७॥
भलो न तजत भल पनौ ज्यों दुख दीजै तास।
ज्यों ज्यों धरियत अग्नि पर त्यों त्यों अगर सुवास॥ ३८॥

ज्यों गुनऊ पर गुन करै ताहि बड़ाई कास ।
औगुनऊ पर गुन करै सिर बलिहारी तास ॥ ३६ ॥
दीन दया छांड़ी नहीं सुनि पुरान में बात ।
न टरी दया दयाल कैं ज्यों भृगु दीनी लात ॥ ४० ॥
दयावन्त रामकृष्ण के और न दूजौ जान ।
रामहरी ऐसे प्रभो औगुन मनहिं न आन ॥ ४१ ॥
भलौ बुरौ सोई भलौ जोई जाहि सुहाइ ।
चकवा चाहत जेठ दिन शशि न सरद सहि जाइ ॥ ४२ ॥
विधु कें केते कुमुद हैं यह जानत सब कोइ ।
विधु समान ता कुमुद कै कौन दूसरौ होइ ॥ ४३ ॥
छोटो बड़ो दयाल कहि चहिए एक सहाय ।
चख चितवत चिरमू बिना कर कपूर उड़ि जाय ॥ ४४ ॥
ताही सों अपनों कहैं अपनायत ता मांहि ।
जामें अपनायत नहीं सो तो अपनो नांहि ॥ ४५ ॥
मन मंजूष गुन रतन है चुप करि दै हटतार ।
पारिख आगे खोलिये कूंची बचन रसाल ॥ ४६ ॥
अधर पट्ट मुख कोथरी वचन रतन तिहि मांहि ।
ताते चतुर न उच्चरै मति परि हथ परि जांहि ॥ ४७ ॥
चाहै ताकों चाहिए चाहै नाहीं सोइ ।
ताकों कैसे चाहिए कहैं सयाने लोइ ॥ ४८ ॥
मिलते कमल न विगसहीं चलत उठै नहिं धाय ।
आदर बिना विवेक यह अपत अपत कें जाय ॥ ४६ ॥
संमन हित करि जो मिले तासों मिलिये धाय ।
भौंह चढ़ाये जो मिलै तासों मिलै बलाय ॥ ५० ॥
समै लाभ सम लाभ नहिं समै चूक सम चूक ।
चतुर चित्त खटकत रहै समै चूक की हूक ॥ ५१ ॥

उत्तम मध्यम अधम नर पाहन सिकता पानि ।
प्रीति अनुक्रम जानिये वैर विप्त क्रम मान ॥ ५२ ॥
सोरठा–मुख देखे की प्रीति ऐसी सब कोई करै ।
वे तौ न्यारे मीति पाछें ते सत गुन करै ॥ ५३ ॥
दोहा—नेह नगर की डगर में अहमद उल्टी चाल ।
मारे फिरि फिरि मारिये खूनी फिरें खुस्याल ॥ ५४ ॥
ए दिल दिल की वात कों ज्यों जानन सामर्थ्य ।
तासों कहा बनाइकें कहिवी सबै अकथ्य ॥ ५५ ॥
परयौ पतंगा प्रेम वस निरखि जोति निज नैंन ।
तन मन सोंप्यौ मित्र कों बहुरि न मूक्यौ बैंन ॥ ५६ ॥
नेंना मन गहने धरयौ भयौ रूप रसलीन ।
भाव व्याज वारिध वढ़यौ छुटवो कठिन प्रवीन ॥ ५७ ॥
नैंन नैंन की जान ही नैंन नैंन को हेत ।
नैंन नैंन के मिलत ही नैंन नैंन कहि देत ॥ ५८ ॥
नैंननि लज्जा ना रहै ना अपजसहि डराहिं ।
प्रीतम आवत देखि कें मिलत अगाऊ जाहिं ॥ ५९ ॥
रामहरी नेहीन को कोऊ न पावत पार ।
अटके नैंना मिलत पिय सर्वस देवै बार ॥ ६० ॥
सोरठा–मैं मन दीनों तोहि ता दिन तें दरसन भयौ ।
सुधि न रही कछु मोंहि प्रेम लाज तुम राखियौ ॥ ६१ ॥
दोहा—हरदी को रंग जरद है चूने को रंग सेत ।
मिले विना क्यों जानिहौ लालन मन को हेत ॥ ६२ ॥
तन मन के विछुरे नहीं चाह बढ़ै दिन रैंन ।
कवहुं संजोगन मान ही देखत भरि भरि नैंन ॥ ६३ ॥
नेही नैंनन कौ कछू उपजी बुरी वलाय ।
नीर भरे निस दिन रहैं तनक न प्यास बुझाय ॥ ६४ ॥

फिरि फिर चितवत ही रहत टूटी प्रेम की लाव।
अंग अंग छबि बैरि में भई भौंर की नाव ॥ ६५ ॥
नैंन दलालन चौहटै मन मानिक पिय हाथ।
रसखान सुडोल बजाय कै बेचौ हिय जिय साथ ॥६६॥
मेरे नैंना मोहि लै बेचत है पर साथ।
जैसे पथ काहि पंथ में ठग वेचत ठग हाथ ॥ ६७ ॥
कांकर पाथर ठींकरी भई आन सी मोहि।
जित जित नैंन पसारिहों तित तित देखों तोहि ॥ ६८ ॥
सोरठा-खरी खटपटी वात कहै न समुझी जाइ जग।
जिहि लागी है गात सो जाने तो जानि है ॥ ६९ ॥
दोहा—सूर हियौ सागर भयौ सीप भये चख लाल।
हरि मुक्ताफल विच परयौ मूंद लिये तत्काल ॥ ७० ॥
लाग्यौ होइ छुटाइये करियै कोटि उपाय।
मनकौ कहा छुटाइये ताके हाथ न पांव ॥ ७१ ॥
चोर चुरावै जो कछू ताही छिन भजि जाय।
मन चुराय मन में बसै तासौं कहा बसाय ॥ ७२ ॥
सोरठा-खरो अनैसो नेह भाग हमारे है परयौ।
विन पानी कौ मेह बिनु दाहे की आग तन ॥ ७३ ॥
दोहा—प्रीति की रीति अनीति है प्रीति करौ जिनि कोइ।
सुख दीपक कैसे बरै विरह नाग ज्हां होइ ॥ ७४ ॥
संमन चिनगी प्रेम की रही कलेजे लगि।
ना वह जरै न वलि भुजै उठै सुलग्गि सुलग्गि ॥ ७५ ॥
मोर सोर सुनि सुंदरी डरी खरी मन मांहि।
काहू विरहनि पर मनौं मैंन परयौ रत बाहि ॥ ७६ ॥
५जरि परत सब अंग। सब चोंबा चंदन लागि।
विधि गति जब विपरीत तब पानी ही में आगि ॥ ७७ ॥

बड़ो मंद अरविंदसुत जिहि न प्रेम पहिचान।
पिय मुख देखन दृगन कूं पलक रची बिच आन ॥७८॥
मोहन वात स्वरूप में जे चख आवहिं जाहि।
तेई लोयन लोयना और हथेरी आहि ॥ ७९ ॥
प्रेम चितेरे की सुमति वरनी कापै जाय।
मोहन मूरति पंय की हिय पट लिखी बनाय ॥ ८० ॥
मोहन मूरति मित्त की जोहन ह्वै बस कीन्ह।
सोहन ह्वै हिरदै चढ़ी मन की किरचै कींन्ह ॥ ८१ ॥
सज्जन तुव गुन बेलि ह्वै पसरी मो उर मांहि।
नेह नीर सों नित बढ़ै कबहूँ सूकत नांहि ॥ ८२ ॥
प्रीतम तेरे दरस बिन मो मन अधिक अधीर।
कहा कहूँ करतार सों दई जु ऐसी पीर ॥ ८३ ॥
लगी चटपटी तन सदा सोवत जाग पुकार।
रामहरी प्रेमीन की वात न पारावार ॥ ८४ ॥
और जात खोयो कछू ढूढ़े लीजै पाइ।
विरही मानस अटपटो ढूढ़ै खोयो जाइ ॥ ८५ ॥
रूप हाटकों देखि के गाहक भये जु नैंन।
जिय गहने धरि लै चले विरह विसाहि हुसैन ॥ ८६ ॥
अहमद डाढ़े प्रेम के बुझि बुझि ते सिलगाहि।
जे सिलगे ते वलि बुझि बुझते सुलगै नांहि ॥ ८७ ॥
अहो मित्त मो चित्त की तें नहिं पाई पीर।
मछली जीवन मरन की ज्यों नहिं जानत नीर ॥ ८८ ॥
जबहि एक तब द्वै कहा जब द्वै तब का एक।
इहै सयाने समुझि कैं रहत आपनी टेक ॥ ८९ ॥
तन मन तरफत रहत है कहे जात नहिं वैन।
बिन देखे घनश्याम के भए जहमती नैन ॥ ९० ॥

नैन कराही तेल हित विरह अगिन असरारि ।
नीर बूंद मोहन दरस परत उठत अतिझारि ॥ ६१ ॥
मिलन मेंड़सों रुकि रह्यौ समुद प्रेम की कोर ।
फैल परयौ सिमटयौ नहीं विरह आड़ दई तोर ॥ ६२ ॥
सोरठा—देखि दिनन कौ फेर उन बिन सब दिन फिर गये ।
दिन बीतत अंधेर राति परें दिन परति है ॥ ६३ ॥
दोहा—रूखी बातन जो तनहि घट अधियारो देह ।
जिहि सनेह सोई जरै कहां दीप कहां देह ॥ ६४ ॥
दोय जीव औ स्याम तन बंक चलन विष खानि ।
प्रेम बचन सुनि शत्रु मुख सीस समर्पित आनि ॥६५॥
तीक्षण वरुणी बान सों वेध्यौ हियो दुसार ।
जालरंध्र कीने मनौं प्रेमी घट अंधियार ॥ ६६ ॥
मोह्यौ नहिं सुनि राग धुनि विध्यौ न उरि छवि बान ।
तिन कौं ऐसे जानि तू पाहन चित्र समान ॥ ६७ ॥
परयौ न रूप तरंग रस अरयौ न मृदु मुसिक्यानि ।
रम्यौ न मोहन भाय रस नीर शत्रु सम जानि ॥ ६८ ॥
प्रेम भेद जाने नहीं विरह भार नहिं लेत ।
तिन तें वन मृग ही भले सुर पलटें सिर देत ॥ ६९ ॥
ए रे भइया पारधी मांस बेंच धन लेह ।
मृगछाला पर गाइयो इह मो मांग्यौ देह ॥ १०० ॥
इन आंतन की तांत करि यह तन तरे बिछाइ ।
इन सींगन को नाद करि गाइ गाइ फिरि गाइ ॥ १०१ ॥
खड़्ग धार सहवो सुगम सुगम दाहिवो देह ।
नेह वचन प्रतिपालवो बड़ो कठिन प्रण एह ॥ १०२ ॥
पुत्र प्राण ते अधिक है अधिक पुत्र ते प्रान ।
दशरथ ने दोऊ तजे वचन न दीन्हौं जान ॥ १०३ ॥

पंच अगिनि साधत सुगम सुगम सहत असिधार।
इकटक प्रीति निवाहिवौ महा कठिन व्यौहार ॥१०४॥
ज्यौंव प्रीति तौ गर्व का गर्वंतु कहा सनेह।
आपा छीजन पर हसन कौन सयान पराह ॥१०५॥
प्रीति न छोड़ै जग हँसे घटै न हिय अनुराग।
रामहरी नित ही बढ़ै कबहुँ न लागै दाग ॥१०६॥
करौ मान अपमान सौ बढ़ै नेह सों नेह।
उन तुम कों दोहा लिखे दोहा उत्तर देह ॥१०७॥
छिनकि मिटावत्ति तन तपति जान परयौ रस छेह।
नेह करति हौ सवनि सों जेठ मास को मेह ॥१०८॥
कहौ आनते आन कछु नवरस नित प्रति लेत।
औरैघां तुम चलत हौ औरैघां दृग देत ॥१०९॥
पच्छिम गुन सब मेटिकें उत्तर मोकों दीन।
पूरव प्रीति विसारि तुम दच्छिन लच्छिन कीन ॥११०॥
मो मन को इन दिनन में क्यों निवहैगो नेह।
जाकी भावरि जगत में तासों वन्यौ सनेह ॥१११॥
विरह अगिन तनतें उठी गए नैन जल सूकि।
अहमद आवा क्यों बुझै दियौ हाथ तें फूंकि ॥११२॥
मनही मन दुख सहत है कहत बनै नहिं बैन।
राति दिना रोवति रहै तसकर तिय ज्यों नैन ॥११३॥
मन रंजक छतिया तुपक विरह पलीता लाल।
आहि आवाज न होइ तौ जाती फूटि जमाल ॥११४॥
नैंना भरे सनेह घट पलक रही चिकनाइ।
नींद बूंद पानी भयौ नेकु नहीं ठहराइ ॥११५॥
प्यासे नित तरसत रहै होत न क्योंहू भेट।
कैसे नैन अघात है जिनके जीवन पेट ॥११६॥

त्यों त्यों प्यासे ही रहत ज्यों ज्यों पीवत जात।
सजल सलोंने रूप की ना चख त्रिषा बुझात ॥११७॥
कसत कसौटी हेम कों लोक रीत इह नेम।
नेह नगर की डगर में भयौ कसौटी हेम ॥११८॥
सोरठा-तिहि पुर देउ पठाय डीठि जारि कज्जल करौ।
सो तन नैन समाय मन मोहन निरखै पिया ॥११६॥
दोहा—कृष्ण भजन में जे लगे तेई गनये सूर।
रामहरी दिन रात वै नैना ध्यानहि पूर ॥१२०॥
नेही सिंघ अरु सूरमा इनकौ इहै सुभाव।
ज्यों ज्यों घायल होत है त्यों त्यों अगहों पाव ॥१२१॥
पावक चुगत चकोर नित भस्म करन को अंग।
ह्वै विभूति सिवसिर चढ़ौ तौ पाऊं ससि संग ॥१२२॥
समौ न कबहूँ चूकिये चन्दन अपनी वोर।
वहुरयौ परवा होयगी या पुन्यौं के भोर ॥१२३॥
उद्‌मी उद्यम बहु करै विधि डारै तिहि ठेल।
ताकौं माली का करै सींचत सूकें बेल ॥१२४॥
तनक स्याम की स्यामता ज्यों द्दग लगी न होय।
कोटिक भान प्रकासिये तऊ अंध्यारौ जोय ॥१२५॥
पिय बिन दीपन बारिहौं मो अंधियारे सुख्य।
करि उजियारो हे सखी काकों देखौ मुख्य ॥१२६॥
या तन को दिवला करौ बाती करौ जु जीय।
लोहू सींचो तेल ज्यों मुख देखन कों पीय ॥१२७॥
सबै कहत यह वो सहै एरी वो सन होय।
मो विरहनि कौ देखि दुख रैन गई है रोय ॥१२८॥
नेह नेह सब को कहै नेह करौ मति कोइ।
मिलें दुखी बिछुरे दुखी नेही सुखी न होइ ॥१२६॥

सँमन दारू ज्यों करौ एक ठौर हुइ पीर ।
ठौर ठौर नटसाल है गांसी सकल सरीर ॥१३०॥
मोहन यह दुख विरह को कापै कहिये रोइ ।
औषध खाही भूख कूं वही अजीरन होइ ॥१३१॥
काल्ह जु प्रीतम चलहिंगे इहै कहत सब कोइ ।
विधिना ऐसी रैंन करि कबहुँ प्रात नहिं होइ ॥१३२॥
प्रीतम बिछुरत रैंन दिन मूरति रहत हजूर ।
मृग तृष्ना के नीर ज्यों आंखिन आगे दूर ॥१३३॥
जो हों ऐसी जानती प्रीति दुहेली होइ ।
देस दुहाई फेरती प्रीति करौ जिनि कोइ ॥१३४॥
लेखन की छतिया फटी कागद धौरी धात ।
अच्छर कारे ह्वै गये लिखत विरह की बात ॥१३५॥
कर लेखन लिख लिख थके मनके परम हुलास ।
पूरे ज्यों पूरन करौ कागर लेखन आस ॥१३६॥
कै प्रभु मन गति तनहि दैकै तन पंख लगाइ ।
कै पेंडिक समपुहुमि करि मित्त मिलनके चाइ ॥१३७॥
कागद नहीं कि मसि नहीं कै मन नांही हेत ।
कै पेंडे पथकन चलत पिय किन पाती देत ॥१३८॥
जोगिन है सब बन फिरी कमरि बांधि मृगछाल ।
बिछुरे सज्जन ना मिलें कारन कोंन जमाल ॥१३९॥
विरह अथाह समुद्र जल केवट नांहि न एक ।
सो विरहनि क्यों जीवती आहि न होती टेक ॥१४०॥
पिय बिन मृतकहि हौं भई परी पुकारों पीय ।
जैसे खाल लुहार को सांस लेत बिन जीव ॥१४१॥
रे मन प्रीति न कीजिये काहू सों चित लाय ।
उरझत काचे सूतलों सुरझावत जिय जाय ॥१४२॥

नेह कृष्न सों कीजिये उरझेहू सुरझाइ।
रामहरी के मिलन कूं विरह पुकारै हाइ ॥१४३॥
वसन मलीन उदास चित निसि उसास भरि लेत।
भूख प्यास लज्जा तजै विरही लक्षण हेत ॥१४४॥
नैना पिय मूरति वसे तिहि सुख रहे समाइ।
ए लक्षण हैं प्रेमके और न कछू सुहाइ ॥१४५॥
तो छवि बूंद जु स्वांत की सीप भये ये नैंन।
मोहन गन गन देत है मुक्ता हल दिन रैंन ॥१४६॥
जासों प्रीति न कीजिये ताकौ हियौ कठोर।
पहिले तन मन हाथ लै फिरि चितवै नहिं ओर ॥१४७॥
सज्जन धेंन तपें हवैं जो तृन नीरै कोइ।
देवत दुर्जन सर्प सम खीर दिये विष होइ ॥१४८॥
सुन्दर तन चित अति चतुर राजभूमि सव पाइ।
मित्र भाव जाने नहीं संमन सो न सुहाइ ॥१४९॥
पलक लगें प्रीतम मिलें छिन न एक ठहराइ।
स्वपनेहू अपने नहीं तिन सों कहा वसाइ ॥१५०॥
गुण कीन्हे जाने नहीं औगुन सवै गहंत।
निगुरे नर की रीति इह कहै सयाने संत ॥१५१॥
भली बुरी एकै गिनै कीन्हे कोटि उपाइ।
प्रीति रीति जाने नहीं चलै आपने दाइ ॥१५२॥
तनक चटक दिन चार लों दुर्जन मन कौ हेत।
पुन्यौ चंद कुसंभ रंग निकसत आवै सेत ॥१५३॥
दादू दुर्जन की मिलन केसू कली रसाल।
पहिले ही मुख श्याम है कहा भये फिरि लाल ॥१५४॥
वपुरो वायस ही भलो तन मन एकै रंग।
मन मैलौ तन ऊजरौ वगुला कपटी अंग ॥१५५॥

आपुन ते समझैं नहीं कह्यौ न मानत चित्त ।
तिनसों संगति जिनि करौ कहै सयाने मित्त ॥१५६॥
बग ज्यों अंग उज्वल रहै कग ज्यों अंतर स्याम ।
तन मन की इहि गति जहाँ ताको तजिये नाम ॥१५७॥
मुहरस दै मन वात लै उपजावत विसवास ।
सो कवहू करिहै खता कही सांच सिवदास ॥१५८॥
हित चित कबहूँ ना धरै करै कपट विस्तार ।
सो अपनों नहिं जानिये कान्हर कहै विचार ॥१५९॥
कान्हर सुख संगी सबै दुख संगी इक दोइ ।
अंगी सोई जानिये दुख सुख सामल होइ ॥१६०॥
संगन जोगौ सो फिरै फिरि खेले खिलवार ।
भौंह फिरें फिर तास की जानस वड़ो गवार ॥१६१॥
जिनके हरिको डर नहीं नहीं लोक की लाज ।
तिनसों वोल विगूचिये सिष्ट भली बछराज ॥१६२॥
सठ सनेह ते डर पये नंद और भैनाहिं ।
सांपिन सुत हित जानिकें गिलै पेट पचि जांहि ॥१६३॥
माखी मकरी दुष्ट नर देखौ इनको ज्ञान ।
अपनौ ही जिय त्यागि के हतें और के प्रान ॥१६४॥
जानि बूझि सांचहि तजै करै झूठ सों नेह ।
तिनकी संगति स्याम जू सपनेहू जिनि देह ॥१६५॥
वैर सनेह सयान को तुलसी जिनहि न ज्ञान ।
प्रेम पंथ में पग धरै पशु विनु पूंछ विषान ॥१६६॥
जग प्रपंच में रंग रह्यो माया गर्भ करेह ।
मूरख नर जाने नहीं रामहरी कौ नेह ॥१६७॥
प्रीति जु धागा प्रेम का जिन तोरयो अकुलाय ।
तोरे तें फिरि जोर ना बीच गांठि परि जाय ॥१६८॥

विधिना जो अति विपति दै द्वै दुःख भूल न देह।
इक सेवा आज्ञान की इक अनरत सौं नेह ॥१६६॥
हित चित दै सबकौं सुनौं सांच कहत है सेष।
संगत तैसे होइ फल यामें मीन न मेष ॥१७०॥
दंत केश नख अधम नर निज थानहि सोभंत।
थान भृष्ट नहिं काज के कहै सयाने संत ॥१७१॥
सर अरु सब्द सुजान उर लगत बराबर घाइ।
सर छूटत है बेग दै सब्द चोट नहिं जाइ ॥१७२॥
साइक घाइ पिराइ पुनि सिमट सरीर मिलाइ।
बचन तीर की पीर वलि मिटै न जौ जुग जाइ ॥१७३॥
अग्नि दहत जे द्रुमलता फिरि फल फूलनि देत।
वचन दग्ध जे जीव वलि बहुरि अकूरन लेत ॥१७४॥
नंद वाह नर नीच की जौ लीजैं सौ वार।
भेड़ पूछ भादों नदी को गहि उतर्यौ पार ॥१७५॥
अहमद हिरदे दुष्ट के भली न मानें कोइ।
जैसे क्वैला दूध के धोय न उज्जल होइ ॥१७६॥
पहिले तौ समझै नहीं फिरि पाछे पछिताइ।
बोए पेड़ बबूर के आंब कहां ते खाइ ॥१७७॥
बड़ घर जनमे कहा भयौ जौ बुधि उपजी नांहि।
जैसे फूल उजारि के वृक्ष लागि झर जाहिं ॥१७८॥
सठ सौं हेत अहेत करि ग्राम सिंघ लौं जानि।
हित चट्टै कट्टै अहित नंद दुहूँ विधि हानि ॥१७९॥
मृदुसौं मृदु कठिनहि कठिन नंद इहै गति सार।
अलि अंबुज में दुरि रहै काटहि काटन हार ॥१८०॥
बोलनि चालनि हसनि में अरु सुनिवे में बात।
चितवन में गति रहन में यों नर परखे जात ॥१८१॥

सज्जन तें सब कछु बसै दुर्जन सों न बसाइ।
मान महातम रोस रिस ज्यों कीजै सुखदाइ ॥१८२॥
सज्जन जिय औगुन गहै दुर्जन जो गुन जाइ।
नाथ गुमट की बूंद ज्यों केतक लौं ठहराइ ॥१८३॥
कोइल सुत ज्यों कागनें पाले अपनो जानि।
जो जैसो ह्वै सो तहाँ मिलहै जाइ निदानि ॥१८४॥
भौंरा आवत दूरतें लेइ कमल की वास।
दादुर भेद न पावही रहत सदा ही पास ॥१८५॥
सज्जन सों सज्जन रमें रमें नीच सों नीच।
अंबुज रस मधुकर रमें सठ दादुर मुख कीच ॥१८६॥
रामहरी सतसंग ते मिटै सबै उत्पात।
खोटे नर के संग ते भली न आवै बात ॥१८७॥
बात बात सब कोऊ कहै बात के हाथ न पांव।
एक बात औषध करै एक बात करै घाव ॥१८८॥
पै पानी की प्रीति में परयौ जु कपटी लौन।
खंड खंड मन जिहि कियौ बहुरि मिलावै कौन ॥१८९॥
सब सुख कीन्हे कपट सों निपट झूठ लै साथ।
अब मन फाटयौ दूध लौं तुमहि तुम्हारे हाथ ॥१९०॥
पिय मोसों जुररा भये नेक न आवत लाज।
औगुन सुन बहरी भई कुही लोक की लाज ॥१९१॥
नेह घटयां नातो मिटयौ रही नहीं पहिचानि।
अब तो टूटी ना संधै बधै न वैसे प्रान ॥१९२॥
कंकन कुंडल मुद्रिका टूटै जुरत सबेर।
मन मुक्ता अरु सजन मन फूटै मिलत न फेर ॥१९३॥
उफ उतरे ते फिरि चढ़ै उतरै चढ़ै कमांन।
मन उतरे फिरि ना चढ़ै ज्यों कुच उतरे जान ॥१९४॥

सब जग देख्यौ ढूँढ़िकें कहूँ न पायौ चैन।
जित देखौ तित कपट है गोसा पकरिहु सेंन ॥१९५॥
काचे खरे सुहावने गादर खरे मिठाहि।
संमन वे फल कौन से पाके ते करुवाहि ॥१९६॥
रूपखीर जल प्रीति अति इह जानै सब कोइ।
करत जुदाई हंस तिहि खलतें कहा न होइ ॥१९७॥
ऐसा कोई ना मिलै जासों रहिये लागि।
सब जग जरता देखिये अपनी अपनी आगि ॥१९८॥
काको कीजै रोवना काको कीजै शोग।
अहमद संग सराइ का सबै बटाऊ लोग ॥१९९॥
झूठे सुख कों सुख कहत मानत है मनमोद।
जगत चबैना कालका कछु मुखमें कछु गोद ॥२००॥
काल व्याल ह्वै जग ग्रसै करि हरि चरन सहाइ।
रामहरी नर दुष्ट तजि तिरिया वुरी बलाइ ॥२०१॥
सिंघा मारन जल तरन मच्छा जानउ देस।
मंजारी सों डरपियो सुत्रिया तोह आदेस ॥२०२॥
कहा न पावक जारे सकै कहा न समुद्र समाइ।
कहा न करै अफल त्रिय किहि जग काल न खाइ॥२०३॥
कह संमन नेकी बदी करि मन सोच विचार।
मदन कहै सो मति करै जे दिन टरै सुटारि ॥२०४॥
ऊजर खेरौ फिरि बसै निर्धनिया धन होइ।
गयो न जोवन बाहुरै मर्‌यौ न जीवै कोइ ॥२०५॥
जो मति पीछे ऊपजै सो जो पहिली होइ।
काज न बिनसै आपनौ दुर्जन हँसे न कोइ ॥२०६॥
सती सनेही सूरमा पानी अरु गज दंत।
एते निकसन बाहरे जो जुग जाय अनंत ॥२०७॥

स्वात सलिल पिय प्रेम तुव घटहि सुभाव धरंत।
मुक्ता और कपूर विष भाजन गुन उपजंत ॥२०८॥
जग में औषध सबन की पै सुभाव नहिं होइ।
रामहरी समुझै नहीं ताहि सिखावै कोइ ॥२०९॥
कहा भयौ वस्तु जु मिली नाहिं न गुण पहिचानि।
ज्यों भिडहारौ जौंहरी रसिक विवेकी ज्ञान ॥२१०॥
मनि बांधी गल भेड़ के परचे नहिं बहु मोल।
कोऊ पारिख लेइगो जानि वस्तु को तोल ॥२११॥
जिन जमाल सांची कहै मानि लेहु सब कोइ।
बुरौ परायौ चिंतये पहिल आपुनों होइ ॥२१२॥
ए नर बुरौ न कीजिये काहू को चित लाइ।
रामहरी बोलै भलो राखै सील सुभाइ ॥२१३॥
कागा धन काको हरै कोइल काकों देत।
बानी मधुर सुनाइकें जग अपनों करि लेत ॥२१४॥
चातक चकवा चतुर नर ए नित रहत उदास।
खर घूघू मूरख पशू सदा सुखी भूवास ॥२१४॥
दरद वंद के दरद की जानें नहीं गवार।
सेऊ सोई जानिहै जाकें ज्ञान विचार ॥२१६॥
शशि कलंक खारो समुद कमलहि कंटक नाल।
जान दुखी मूरख सुखी दई कु बूझ जमाल ॥२१७॥
समसों समता कीजिये अनसम सों वे काम।
गुंजा कनक बराबरी करी तु मुख भय स्याम ॥२१८॥
संपति विद्या ज्ञान गुन प्रभुता नृप सुख पूर।
रामहरी चीन्हे नहीं दया न मन सब धूर ॥२१९॥
फल दल संपति पाइ द्रुम करत नहीं पर काज।
बिनु उपकार वृथा विभो आवत नांहि न लाज ॥२२०॥

पर उपकारी पुहुमि पर देखौ इनकौ हेत।
केसर पान मल्यागरी तन तज शोभा देत ॥२२१॥
वैरीहू को हित करै बड़े लोग अनयास।
चूरौ चीरै चंदन लौं चढ़ै करोत सुवास ॥२२२॥
तुलसी टेरे कहत हैं सुनियौ संत सुजान।
हेम दान गज दान ते बड़ौ दान सनमान ॥२२३॥
आप बड़ाई आप मुख कहत लजात सुजात।
जैसे कुल की कुलवधू पर घर जात लजात ॥२२४॥
मान महातम प्रेमरस गरवा तन गुन नेह।
एते सब जव ही गए तबहि कियौ कछु देह ॥२२५॥
सबते बुरौ जु मांगनों मांगत निकसै जीव।
पानी चाहै आपनों पानी मागन पीव ॥२२६॥
मांगन जापै जाइये जाके मुख पै लाज।
आगे ते जु प्रसन्न हुइ पूजे मनके काज ॥२२७॥
पंडित कवी सु सूरमा दाता इक रस रीति।
ए गुन जा नर में अधिक तासों कीजै प्रीति ॥२२८॥
मित्र होत ब्रहु जगत में अप अपने अनुमान।
मोहन औगुन नाल है सोई सज्जन जान ॥२२९॥
औगुन होइ जु मित्त में मित्त न चित्त धरंत।
केतिक रस बस मधुप ह्वै दुःख कंट न गनंत ॥२३०॥
सत चरित वरषा सुखद फूलत सब संसार।
आक जवासे लौं कुजन होत हियौ जर छार ॥२३१॥
तुलसी वनहि न जाइये ज्यों मन चंचल होइ।
ज्यों मन चंचलता तजै तौ घर ही बन जोइ ॥२३२॥
जथा लाभ संतोष चित श्रीपति चरन सनेह।
तुलसी सो प्रिय राम कै कानन बसै कगेह ॥२३३॥

हरि पूजे पूजे सब जीव जंतु कुल देव।
हरि के पूजे परसराम सफल भये सब सेव ॥२३४॥
रिद्धि सिद्धि वह जानि दै करामात किहि काम।
गिरधर हरि को भजन करि छाड़ौ सकल हराम ॥२३५॥
ज्ञात गोत सब परिहरें प्रभु सेवाकी आस।
नंद नंदन के ह्वै रहे ताकें कहिये दास ॥२३६॥
दंभ सहित कलि धर्म सब छलहि सहित व्यौहार।
स्वारथ सहित सनेह सब मनही उचित अहार ॥२३७॥
मगर उरग दादुर कमठ जल जीवन जल गेह।
तुलसी एकै मीन कौ है सांचोहि सनेह ॥२३८॥
चित धरिये पर काज कौं करि पपिहा को जीव।
आप पियासो ही रहै कहै और सों पीव ॥२३९॥
माया ते माया मिलै करिकैं लंबी पांख।
हरिजन कों चीन्है नहीं चारों फूटी आंख ॥२४०॥
फूटी आंख विवेक की लखै न संत असंत।
जाके संग वह दो धनों तासों कहै महंत ॥२४१॥
आद संग आई नहीं अंत संग नहिं जाय।
बीच मिली बीचै रही ताकों पचै बलाय ॥२४२॥
सेऊं संपति बिपति कूं झुर रोवै ते कूर।
राई घटै न तिल बढ़ै जे विधि लिखे अंकूर ॥२४३॥
परमारथ कों अनुसरत बीचहि स्वारथ जोइ।
खेती कीजै नाज कों सहज घास बस होइ ॥२४४॥
साध सबै मेरें बड़े अपनी अपनी ठौर।
सब्द विवेकी पारखू ते माथे के मौर ॥२४५॥
थोरे अक्षर बहुत हित कहै सुनै रस सार।
ताहि मनोहर जानिये रसिक चतुर निर्धार ॥२४६॥

कहि कवीर साहिवतें डरिये बिगरी फेरि सुधारैं ।
नारद कूं नारी कर डारें अजामेल को तारैं ॥२४७॥
आरति सुनि गजराज की उठि धाये नंदलाल ।
कहु मुरली कहु पीतपट कहूँ रही वनमाल ॥२४८॥
सकल धर्म को धर्म है सकल ज्ञान को धाम ।
सकल जोग को जोग है एक कृष्न को नाम ॥२४९॥
रूप प्रेम आनंद रस जो कछु ब्रज में आय ।
सो सब गिरिधर देव कों निधरक वरनों ताय ॥२५०॥
कहा करै रसखान कों कोऊ लोग लवार ।
जाको राखनहार है माखन चाखन हार ॥२५१॥
रामहरी बिनती सुनौं नागर नंद किशोर ।
हम से अज्ञ अधीर की देख न करनी और ॥२५२॥
फुटकर दोहा जुद जुदे नहीं अनुक्रम जान ।
रामहरी संगनि करी अपनी बुधि प्रमान ॥२५३॥
अव्द आठ दस तीस द्वै जेठ सुदी रवि तीज ।
मन रोचक यहि ग्रंथ पढ़ि प्रेमभक्ति रस भीजि ॥२५४॥
दो सत पचपन ऊपरै दोहा चुनि चुनि सोध ।
बुधिविलास चित चतुरई करि हरि प्रीति प्रवोध ॥२५५॥

॥ इति श्रीबुधिविलास संपूर्णम् ॥

॥ श्रीराधारमनचन्द्रो जयति ॥

॥ अथ ग्रन्थ सतहंसी लिख्यते ॥

दोहा—श्रीराधारमन जू चरन करि परि चरन सुचित्त ।
विषै चरन मन वावरे विचरन जग मग मित्त ॥१॥
वारन को तारन अहो वार न लागी तोहि ।
वारन करिये हे प्रभो वारान भटकत मोहि ॥२॥

धारनितें व्रज राखि लिय गोधन धारन कीन।
धार नदी संसार की वहत सुधारिन वीन ॥३॥
कर गहि कै तारयौ करी कर ही सों प्रभु आप।
करिनी की मोकों करी रवि कर कैसी ताप ॥४॥
तारी लाई नाहिं जिन सो तारी प्रभु वाम।
तारी विन तारे खुलत दै तारी लै नाम ॥५॥
घरी जनावत ही रहत घरी भजे नहिं राम।
घरी भई सव पुन्य की घरी कुमति वे काम ॥६॥

अथ शिक्षा

जा रज कों चाहत रमा जा रज तातें जान।
जा रज तनतें त्यागिये दुःख जा रजतें मान ॥७॥
ता रस कों किन सेइये ता रिसि सकल जो लेत।
ता रस हित जो होय तौ तार सब्द करि हेत ॥८॥
सरवर सरिवरि जात ही सर वर सरवर सात।
सर व्रर सरि वरि सात ही सरवर सरवर जात ॥९॥
मिथ्या रूपी जग नगनि अहो नगन सुख रूप।
नगन काव्य ही में सुखद नगन गाठि में भूप ॥१०॥
सावन में घन सार है जेठ माहिं घन सार।
झूठहि हू घन सार है वनहू कौ घन सार ॥११॥
सर सवही सरिता अहो सर सवही जल कूल।
सरस वही चलि नाल गत सरस वही रहि फूल ॥१२॥
कनक न बांधो गाठि में कनक न जाचो आप।
जाचे हू कन कन मिलै कनक न खाहुत थाप ॥१३॥
तारन में जौ जाइयै हेम मतारन पीय।
तारनि गुहे सुहावने तार नि पहिरौ हीय ॥१४॥
धरनी की दिस देखिये धरनी की मन मांहि।

धरनी धर बिनु और मति धरनी तो कों नांहि ॥१५॥
नार्मानि राखौ हीय में ना मनि राखौ हीय।
नाम न ह्वै है जगत् में नाम न धारौ पीय ॥१६॥
तारे ता ससि सों लगों तारे जिन सु अभाग।
तारे वारे कौन हे खोलत तारे भाग ॥१७॥
पट दीजै लखि जाच कहि पट भूषन निर्धार।
पट दीजै नहिं बावरे पटुता यही विचार ॥१८॥
माग न जाके पद लुटत करत उमागन ध्यान।
तासों जो मागन करत ताहि सु मांगन जान ॥१९॥
करिनी चढ़ि वूड़त सबै करि नी करि तरि जात।
करनी की विधि सो तजौ करिनी की प्रभु बात ॥२०॥
यागन कीजत हरि भजन सो माया गन आनि।
यागनि कीजतु नित नये तेइ गया गन मानि ॥२१॥
जमर्नाहि तारत जो सदा ता जमुनहि किन हेरि।
जमनहि जानत है तऊ जम नहि लखि हैं फेर ॥२२॥
मरी सुखै है ताहि जिन सुमरी नहिं हरि गाथ।
जो भूली हरि नामरी सोई मरी अनाथ ॥२३॥
(अथ पूर्वानुराग श्रीराधे वचन सखी सों)
देहरि कर मो बात सुनि देहरि अति थहराय।
देहरि धसि गुरजन रुकी दे हरि मोहि दिखाय ॥२४॥
सखी वचन श्रीकृष्न सों
जुरि हैं प्यारे मीत सों जु रहै तन में प्रान।
जु रहै विनु वत रानते अजु रहै सुवतरान ॥२५॥
बाती ज्यों खुल जाय जौ जब बाती की प्रीति।
बाती ज्यों तब पऽरि है कह बाती नहिं मीति ॥२६॥
पछरत है विरहाग सों पछ नहि करत हमारि।

पछ बीते क्यों जीय हैं हे पछ धरन मुरारि ॥२७॥
सुतो काल की करत है अहो काल की बात।
कहौ काऽलि की सुनित तुम काल सु वीत्यौ जात ॥२८॥
एक हरी कैसी करी तन की विथा हरीन।
हरी हरी कहि कहि मरी भई अजों सु हरी न ॥२९॥
वालनि ज्यों काटी नये करि बालनि सों प्रीति।
वालनि ज्यों फिरि हों हिये बालन हू जे मीत ॥३०॥
वसन हमारौ है कछू वस न दीजिये ग्राम।
वसन सु कैसे दीजिये वसि न तिहारे भाम ॥३१॥
हरिनी कैसी भांति हैं हरनी कैसे नैन।
हरि नीके मन जात है हरि नीके सुनि बैन ॥३२॥

श्री कृष्न वचन सखी सों

लखत सीस वह चूनरी करत चूनरी चित्त।
वैन करत कछु चूनरी पर चूनरी सुवित्त ॥३३॥
वेसर ही वसि नाक में वे सर सव ही सोंजु।
वेसर देखत ही करत वेसर सांच कहोंजु ॥३४॥
वीते बरसा सन अरी सास न करत सुवाहि।
बडडे सासनि भरत हैं सासन बोलत ताहि ॥३५॥
गा हीता के परिक जो में अवगाही जाहि।
ता दिनते गाही भई सुभ गाही तिय आहि ॥३६॥

सखी वचन श्रीराधा सों

दीनी कज रारे महा इन कजरारे नैन।
कजरारे तिय क्यों करैं कजरा रे ती हेन ॥३७॥
तूड बावरी खोल जिन अहे बावरी वाल।
लगि जैहै कोउ बावरी गए वाव री ताल ॥३८॥
तांन न तीछन वान सर तांननि विपम सुआहि।

तुव मुख की तांनन सुनत मुखता न न अवगाहि ॥३६॥
वारी ही फल पाइये तातें वारी ताकि।
वारी जिनि हू जै अहो वारी में मति झांकि ॥४०॥
ताके जोग न तू अरी जोगनि करत मुरारि।
जोगिन ह्वै निरवाह है जो गिन करै विचारि ॥४१॥
वहै वकाऽरी जिन अरी कारी तोकों कीन।
कारी सों कहा होयगो कारीगर न नवीन ।.४२॥
वारी जिन विरहाग कों वाऽरी कों जिन ताकि।
वारी क्यों न संभारिये अपनी वारी झांकि ॥४३॥

श्रीराधा वचन सखी सों

कहौं कहा मैं ताऽलिसों ताल न आवत ताहि।
नित ही रहत सुताल पर ताल हेत अवगाहि ॥४४॥
सार न मेरी जानई सार दिये का होय।
पुनि पुनि फिरत जु सार ज्यों सार आहिं पिय सोय ॥४५॥
चारन ज्यों गावत तिन्हें चारन जात जु गाय।
चार नि ला एहू मिलत चारु न वनत उपाय ॥४६॥

अथ होरी

अये वीर बन की रस व छुए गुलाल अबीर।
फाग मांहि बनि वीर वर खेलत बलि वल वीर ॥४७॥
अथ रास-रास मंडली मांहि मिलि करत पिया पिय रास।
करि त रास सब आस कों करत सुखन की रास ॥४८॥

अथ माननीय सों सखी बचन

काऽली जिन ऐसी करी काली ताकों जान।
काली ह्वै तापर अहो काली ज्यों रिस ठान ॥४९॥
लीक लगत है वावरी तजे लोक की लीक।
ह्वै अलीकरहिये सदा अली कहत हौं नीक ॥५०॥

न गरब कीजै स्याम सों सुनि गरबीली वाम।
ज्यों न गरहि पै पिय हिये नगर वास वसि भाम ॥५१॥
नाऽरी मानहु मीत कों तू नारी सु विशेष।
ना री हूजै मूढ़ मति नारी तौ पिय देष ॥५२॥
का मन ते पिय टरत है हे कामिनि सुख दैंन।
कामनि करत सु हीय में काम न आवत वैंन ॥५३॥
जामिनि बीती जात है जाम न लावहु वार।
जा मनि कों नित ढूंढ़िये जा मन तास मझार ॥५४॥
कर वर ज्यों राखो सदा करि वर मीत गुपाल।
करि वर माल हिये धरो कर वर सों है आलि ॥५५॥
ये आये हैं नाह री ये ना हरी निहारि।
जिन विन तूही ना हरी करि न नाह री नारि ॥५६॥
करकस हैं ये नैन अति कर कसि लेत गुपाल।
करक सहत दिन रात वे न करि कसनि वेहाल ॥५७॥
निशि बीतत भा गन गनत भागनि पायौ पीय।
भाग न तू अव कुंज तें अहे स भागन तीय ॥५८॥
॥ श्रीराधा वचन सखी प्रति ॥
निदरि न मेरी वात कों दरि न करै जो बाल।
दर न तास की जगत में फिरत सु दरनि गुपाल ॥५९॥
॥ सखी वचन श्रीकृष्ण सों ॥
मांन भरे डोलत सदा मन वत नांहि सु मान।
ता स मान तौ मा न है मेरी वात जु मान ॥६०॥
अथ काल्हंतरिता-अपनौं ही है पांप री तकी पापरी हौंन।
खेंचत तुच ज्यों पापरी वधी पा परी कौंन ॥६१॥
गली न गई सुमित्त की जहां है राग गलीनि।
मेरी गली न सों सुबुधि जासों सुध अग लीन ॥६२॥

अथ पंडिता-मोहि न मारो मीत हो मो हनि रहिहौ नांहि ।
मोहन सब जानत तुम्हें मोह नही के मांहि ॥६३॥
प्रातहि आए आरसी लेहु आरसी पीय ।
तोहि आ रसी जानिकें लगति आर सी हीय ॥६४॥
लालन ज्यो लरिये न पिय लालि न जस की तोहि ।
लाल न मो बिन और जग लालन प्यारे जोहि ॥६५॥
तुम तौ हो पिय ना रसी रहे नारसी नाय ।
वेई तो हैं नारिसी हमें ना रिसी आय ॥६६॥
सोंहनि सों मिलि कै करत सोंह न भली गुपाल ।
हमकों तो सोंहन भए हे सोंहन नंदलाल ॥६७॥
सनि रहे जाके रूप सों स न में आहि मुरारि ।
सन ज्यों खेंचत खाल क्यों सनि ज्यों करत अंध्यार ॥६८॥
गुनही हौ सुबंधे रहौ ता ही के गुन मांहि ।
वे गुन ही कैसे बंधै गुन ही में हैं नांहि ॥६९॥
सांचे काढ़े से लगत सांचे काढ़े बैन ।
सांचे हैं तुम कहांते ये सु अ सांचे नैन ॥७०॥
चातग चाहत घन गरज तुम्हूं गरज के लाल ।
गरि जत जै है यह चलन गरजु त हीर हिमाल ॥७१॥
बरसौ है बादर भए बर सौ है कत खात ।
बरसो हैं रा खो नयन बरसो हैं ये गात ॥७२॥
लाल भए अब लरनकों करि निसि लोचन लाल ।
लाल जात है हाथ तें बाल न हूजै लाल ॥७३॥
सारी परी सरौट ये सारी में ब्रजनाथ ।
सारी ज्यों बोलत सु उह सारी ज्यों रहि साथ ॥७४॥
इनके नै न रु सुपन हूँ जानत हैं ये नैन ।
तऊ तिहारे नैंन ये भए हमें उप नैन ॥७५॥

ताही कें उर लागियै ता ही सों रहौ पाग।
रस ताही सुख पाइयै सस ताही अनुराग ॥७६॥

राधा वचन सखी सों

गारी देत न आवही सबै बिगारी आज।
अरी अगारी होयका इन गारी कुल लाज ॥७७॥

सखी वचन श्रीकृष्ण सों

तुम सब ही हौ नार में हे पिय निपट सुनार।
नारि न ए वह जानि हैं नारि नि मांहि सुनारि ॥७८॥

अथ विप्रलम्भ-राधा वचन सखीसों

सो मन है यह आगरी सोम न थाके मांहि।
सोमनि जौं लौं मिलत नहिं तो लौं सो मन नांहि ॥७६॥
हे सखि बीत्यौ सालसो अब हिय होत सुसाल।
टूटे साल तमाल सब क्यों हिय होत खुस्याल ॥८०॥
देखौ केलि फरी अरी अजौं फरी हे नांहि।
सफरी ज्यों मारत मदन लिये फरी कर मांहि ॥८१॥
बालम नहिं आए अहो आई देखौ बाल।
बाल सेत जब होंहिगे तब कहा करिहै बाल ॥८२॥

ऊधौ प्रतिवाक्य

ऊधो जू वे सत रमन क्यों न सतर मन होय।
याते भाषत सत रमन न सत रमन प्रभु सोय ॥८३॥
ऊधो सर मन लागई सरम न आवत ताहि।
स रमनतें वहि जात हैं जे ता सर मन आय ॥८४॥
हरी वरी है कूवरी वरी देह सुनि बात।
वरी कौन अब खाय है वरी न खाई जात ॥८५॥
ताके हैं अलि कूवरी नाम कूवरी आहि।
करी कृष्न ताहि कूवरी ता कू वरी न जाहि॥ ८६ ॥

ऊधो तेसु पुराण है सुनत सु नांहि पुरान ।
भई पुरा न सुकरत हैं दीन्ही त्याग पुरान ॥८७॥
ऊधो वे वारे सुजिन तुम पर वारे प्रान ।
देखौ व्रज वारे सबै तुम वारे व्रज आन ॥८८॥
ऊधो उह कुवरी जु है कु वरी है विख्यात ।
कुवरी ज्यों रहि काख में कु वरि या की ज्ञात ॥८९॥
आनी है कहा दान दै निवहैगी सु सदा न ।
पाए कुवरी दान में कितने करी सदा न ॥९०॥
ऊधो हरि सु पुरी गए पुरी कछू मन आस ।
कुवरी वपुरी कों किती दई पुरी तिह दास ॥९१॥
ऊधो ताने जोग ही सु तौ जोग ही आहि ।
हमें जोग ही कों करी दै संजोगहि ताहि ॥९२॥
ऊधो सुनिये कान दै छांड़ि दीज़िये कांन ।
कुवरी पर भइ का नकी विनही मोल विकांन ॥९३॥
जे संजोग के जोग हैं तेई करिहैं जोग ।
हम वियोग के जोग हैं हमसों बनै न जोग ॥९४॥
ऊधो हरि ताके मनहि हरि ता सों लपटात ।
हर ह्वै हमरे प्रान क्यों हरत कहौ यह बात ॥९५॥
ता तनसों लागे रहौ तात न धरौ सुचित्त ।
ता तनि मांहि सपूत हौ तात नि बधे सुनित्त ॥९६॥
हे ऊधौ वे वरज हैं वरजत नहिं तुम दास ।
वर जत कैसे रहेगो अवरज तियके पास ॥९७॥
शची सून की कृपा बल सतहंसी बल नाम ।
करी वैष्नव दास बल वल वृंदावन धाम ॥९८॥
हरी राम हैं जौंहरी जौ हर परख प्रवीन ।
तिंह प्रेरे जौं हरि करी जौं हर भरी नवीन ॥९९॥

दोहा जम जुग पद न घटि जमकें धरी बनाइ।
जम कें जे नर सुनेंगे जम कें ते नहिं जाइ॥ १०० ॥
सत ही सब दोहा किये सब ही कौ सत जान।
सत पद पावत सुनत ही इही सु रुत करि मान ॥ १०२ ॥
राम ताप वसु विधु अवद माघ शुक्ल मधु वान।
कुज दिन वृंदावन प्रगटि धरिहू कंठ सुजान॥ १०२ ॥
॥ इति श्री सतहंसी संपूर्णम् ॥

❀ श्री राधारमणचंद्रो जयति ❀

॥ अथ ग्रन्थ बोधबावनी लिख्यते ॥

दोहा—सुमिरहु श्री राधारमण, शचीसून व्रज भौन।
पांच बात नित याद करि, कहां ते आयौ कौन ॥ १ ॥
कहा करन कहा करत हों, जाऊँ कहाँ विचार।
और कछू नाहिन बनें, च्यार बात हिय धार ॥ २ ॥
यथा लाभ संतोष करि, छिन छिन लै हरिनाम।
यथा शक्ति कछु दान दै, कृष्ण चरन कर धाम ॥ ३ ॥
सोरठा-हरि भजि करि शुभ काज, भूल विलंबहि जिनकौ।
निहचै कीजै आज, कहा भरोसौ काल कौ॥ ४ ॥
दोहा—झूठौ जग सों राम की, सांचे कृष्णहि कीन्ह।
रामहरी सांचो लगत, माया भ्रम आधीन ॥ ५ ॥
रे मन सोंचे कृष्ण भजि, माया भ्रम दे त्याग।
खेल खिलारी ने किया, मन धरि लेवै राग॥ ६ ॥
मिथ्या नस्वर जगत सुख, सबै दुःख को धाम।
इक रसना आनंद मय, एक कृष्ण कौ नाम ॥ ७ ॥
यह विषया विश्वासिनी, भोहन जिन पति ख्याइ।
सकल जगत खायो तऊ, खाते छिन न अघाइ ॥ ८ ॥

परयौ विषै के स्वाद में, ऐसौ रह्यौ लुभाइ।
तेही रस बीती उमर, गह्यौ काल ने आइ ॥ ६ ॥
मत्सर क्रोध भरयौ रहै, अरु सहाय अभिमान।
विन पावक जरवौ करै, महा मूढ़ अज्ञान ॥ १० ॥
जब लगि मन छांड़त नहीं, सब बातन को लोभ।
तब लग हियें न उपज ही, कृष्ण प्रेम रस गोभ ॥ ११ ॥
सोरठा–जब लगि याको ज़ीव, तब लगि हरि भेटें नहीं।
तब ही पावै पीव, भेट करै जब जीव की ॥ १२ ॥
दोहा—मोंहन जग ब्यौहार तजि, वनज करौ तिह हाट।
कृष्ण पदारथ पाइये, जिय कोड़ी की साट ॥ १३ ॥
जदपि अगम तें अगम अति निगम कहत हैं जाहि।
तदपि रंगीले प्रेम तें निपट निकट प्रभु आहि ॥ १४ ॥
प्रेम प्रेम सब को कहै, कठिन प्रेम की वात।
रामहरी जब जानिये, कृष्णहि सुध दिन रात ॥ १५ ॥
सोरठा–गौंह न छांड़हु और, हित मोहन जो चाहिये।
लहिये स्यामल गौर, अवगाहे सिंगार रस ॥ १६ ॥
दोहा—बिना प्रेम हरि मिलत नहिं, महा कठिन यह प्रेम।
रामहरी तजि जग विषै, भजौ कृष्ण करि नेम ॥ १७ ॥
विद्या आदर लक्ष्मी, और ज्ञान गुन गर्व।
प्रेम पौरि पग धरत ही, गए ततक्षण सर्व ॥ १८ ॥
प्रेम पंथ में जे परैं, सीस दक्षना देह।
लोभी सीस न दे सकै, नाम प्रेम को लेह ॥ १९ ॥
नेह निवाहन कठिन है, फिरयौ जगत सब जोइ।
विमल प्रीति नहिं देखिये, स्वारथ लगि सब कोइ ॥२०॥
चढ़ि कें मैंन तुरंग पर, चलवो पावक मांहि।
प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सव कोउ निवहत नांहि ॥ २१ ॥

सोरठा—प्रेम सु खांड़े धार, ऐसा कौन सु चलि सके।
जिन सिर धरयौ उतार, तिन ही ता मग पग धरया ।।२२।।
निपट अटपटी बात, मोहन रूप सनेह की।
कही सु कापै जात, ऐसा को नर जानही ॥ २३ ॥
दोहा—ज्यों रसना अरु हिय में, बात न आवै चित्त।
सो कागर पै कहौ क्यों, लिखी जात है मित्त ॥ २४ ॥
जोगी भोगी रोगिया, अरु नेही वपराज।
इनके नैनन सों मिलत, नीदो आवत लाज ।। २५ ॥
जे घट विरह अवा अगिन, परपक भये सुभाइ।
ताही घट में नंद हौ, प्रेम अमी ठहराइ ॥ २६ ॥
मोहन लगन सनेह की, जा तन लागी होइ।
सुधि न रहै तिहि देह की, कहा एक अरु दोइ ।। २७ ।।
मतवारे की बात जगत में, समुझि सकै नहिं कोइ।
मन मोहन इह सो समझ, सो मतवारा होइ ॥ २८ ॥
जाकी मति हित बावरी, छक्या प्रेम मद चित्त।
मोहन ताकी बात कों, विलग न मान्हु मित्त ।। २९ ॥
जग व्यौहार अहार सुख, लाज सकुच पहिचान।
मन मोहन गौंहन परें, भूलें सबै सयान ॥ ३० ॥
भूत छिये मदरा पिये, सब काहू सुधि होइ।
प्रेम सुधा रस जो पिवै, ताहि न सुधि रह कोइ ॥ ३१ ॥
साधन करै अनेक जो, कोटि कोटि जुग जाहिं।
तऊ न आवत प्रेम बिन, रसिक कुंवर मन माहि ।।३२।।
प्रेम भक्ति की एक पल, कोटि वरष को जोग।
प्रेम भक्ति संजोग है, जोग प्रेम बिन रोग ।। ३३ ॥
जहाँ प्रेम तहाँ हरि बसै, प्रेम विना हरि नांहि।
देखो प्रेम प्रतीत यह, ऊखल आप बंधाहि ॥ ३४ ॥

गोपी वस भये कृष्ण जू, एक प्रेम के हेत।
नाना नाच नचाइ कें, तनक छाछ कर देत ॥ ३५ ॥
ध्वजा प्रेम की गोपिका, वस्यौ प्रेम इन धाम।
लीला वहु हरि संग करि, प्रेम बसी घनश्याम ॥ ३६ ॥
ब्रह्मा शेष सुरेश शिव, नारद ध्यान न देत।
सो हरि खेलत गोप संग, झूठौ माखन लेत ॥ ३७ ॥
बिछुरन मांहि मिले रहैं, सहज सनेही मित्त।
जिह तिंह चाह्यौ चाहिये, तौ ब्रज बसिये नित्त ॥ ३८ ॥
ब्रज लीला जाने विना, प्रेम भक्ति है दूर।
जो चाहै श्री कृष्ण कौं, वसि ब्रज जग तजि सूर ॥ ३६ ॥
दयावंत श्री कृष्ण जू, प्रेम भक्ति आधीन।
रहै सदा सत्संग ब्रज, रामहरी ह्वै दीन ॥ ४० ॥
जग डरिये बसिये सु ब्रज, सखा कृष्ण हिय राख।
श्री राधा औ सखी ब्रज, उन ही के गुन भाख ॥ ४१ ॥
सोरठा—आरत होइ पुकार, हाय कृष्ण कब मिलौगे।
मोसे अधम उधार, रामहरी विनती सुनों ॥ ४२ ॥
दोहा—वड़ौ नेह हरि सौं करै, और न कछू सुहाइ।
तुलसी चंद चकोर ज्यों, तलफत रैंन विहाइ ॥ ४३ ॥
जमला हरि सों प्रीति करि, जो जुग आछै पास।
न वह भूलै वछरै, ना तू होइ निरास ॥ ४४ ॥
अंजन मंजन पहिरि पट, गर्व करौ जिन कोइ।
प्रेमा भक्ति सुलच्छनी, कृष्णहि जिहि वसि होइ ॥ ४५ ॥
सुद्धि प्रीति करि कृष्ण सों, और न मन में राख।
रामहरी हरि निकट ब्रज, है शास्त्र की साख ॥ ४६ ॥
सोरठा—प्रेम भक्ति ब्रज धूर, दुर्लभ ब्रह्मादिकन कूं।
रामहरी से क्रूर, करी न सतसंग हरि भजे ॥ ४७ ॥

दोहा—प्रेम भक्ति गुर संत ब्रज, राम हरी करि ध्यान।
गाफिल काल ग्रसे सवै, जग प्रपंच डर मांन ॥ ४८ ॥
डर पारस डर परम गुरु, डर करनी में सार।
खोजी डरे सु ऊबरै, गाफिल डारे मार ॥ ४९ ॥
सवै चतुर अरु बड़े हैं, अपनी अपनी ठौर।
अभिमान तजैं हरि कूं भजैं, सोई चतुर सिर मौर ॥५०॥
कथनीं नांहिन पाय हरि, पैये करनी भोइ।
वात नदी पग ना वरै, वारें दीप ग होइ ॥ ५१ ॥
करुणा निधि श्री कृष्ण जू, नेंकु लगै वुहि और।
तव ही होंइ प्रसन्न प्रभु, सव संसय दें तोर ॥ ५२ ॥
अगहन पून्यौ संवत है, अष्टादस पैंतीस।
वरषोत्सव वलदेव कौ, वृंदावन रज नीस ॥ ५३ ॥
बानी नाना कविन की, बोधबावनी धार।
रामहरी पढ़ि अर्थ लहि, हरि भजि उतरौ पार ॥ ५४ ॥
॥ इति श्री बोधबावनी संपूर्णम् ॥

❀ श्री राधारमणो जयति ❀

॥ अथ रसपचीसी लिख्यते ॥

इष्ट सु राधारमण हैं, शची सून संकेत।
राधाकुंड नदीश्वरै, वृंदावन रस खेत ॥ १ ॥
जीभ कसौटी स्वाद की, श्रवण कसौटी वैंन।
वास कसौटी नासिका, रूप कसौटी नैंन ॥ २ ॥
जोवन आगम सिसु गमन, कटि पटि कसति कुमार।
मनहु छीन छति छीज कें, द्वै नृप बीच उजार ॥ ३ ॥
यह कटि परती टूट कें, गुर उरोज के भार।
जो नहिं हो तो त्रिवलि कौं, दृढ़ बंधन आधार ॥ ४ ॥

मृग मराल कोकिल मयंक, वारिज केहरि मीन ।
कदली दारयौ कीर छवि, लई राधिके छीन ॥ ५ ॥
सिंघ कमल कोकिल उरग, गति मराल गज चाल ।
कीर कुरंगनि मीन छबि, अधर पवाली लाल ॥ ६ ॥
भाल दयाल बिसाल छबि, तिलक पोल परताप ।
जगत करन जनु करि दई, जगत विजै की छाप ॥ ७ ॥
सुंदरि के सुंदर वदन, तिल सुंदर शुभ भांति ।
जनु मृग मद छिरका परयौ, कस्यप सुत की कांति ॥ ८ ॥
अलक लटकि लगि कुचन पर, उपमा ऐसी देत ।
शिव तजि कै नागिन चढ़ी, शशि मुख अमृत लेत ॥ ९ ॥
वाला वैसंधि रूप जनु, दीप जग्यौ जग ऐंन ।
उड़ि उड़ि परहि पतंग जिमि, नर नारिन के नैंन ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

दुति लावन्य रूप मधुराई, कांति रमनता सुंदरताई ॥११॥
मृदुता सुकुमारता जो गाई, नहिं नहिं जनि इत किततें आई१२

॥ अथ दुतियथा ॥

दुति तिय तन अस दीन्हि दिखाई, सरद चंद जस झलमलताई १३

॥ लावन्य ॥

ललना तन लावन्य लुनाई, मुक्ताफल जस पांनि पझाई ॥१४॥

॥ रूप ॥

विन भूषन भूपित अंग जाई, रूप अनूप कहावै सोई ॥ १५ ॥

॥ मधुरता ॥

निरखत जाहि तृपति नहिं आवै, तन में सो माधुरी कहावै ॥१६॥

॥ कांति ॥

ठाढ़ी होत आँगन जब आई,तन की जोति रहति छिति छाई ॥१७
रंजति राजकुंवरि तहां ऐसी, ठाढ़ी कनक अवनि पर जैसी ॥१८

॥ रमनीयता ॥

देखत अनदेखी सी जोई, रमनीयता कहावै सोई ॥ १९ ॥

॥ सुंदरता ॥

सब अंग सुमिलि सुठौन सुहाई, सो कहिये तन सुंदरताई ॥२०॥

॥ मृदुता ॥

परसत हू तन नांहिन परसी, अस मृदुता प्रमदा तन तरसी ॥२१॥

॥ सुकुमारता ॥

अमल कमल दल सेज बिछावै, ऊपर कोंमल पुहप धरावै ॥२२॥
बैठि रमणिमणि कठिन जनावै, तौ यह सुकुमारता कहावै ॥२३॥
दोहा—नवला निकसत तीर जब, नीर चुवत वर चीर।
जनु असुवन रोवत वसन, तन बिछुरन की पीर ॥ २४ ॥
कंज कंज प्रति कुंज पर, अलि गुंजत परभात।
जनु डर तम तेजहि भज्यौ, रोवत ताके तात ॥ २५ ॥
वृंदावन जमुना पुलिन, राधाकृष्ण विहार।
नंददास सत कविन की, बानी करै अहार ॥ २६ ॥
चौ०-दोहा चौपई रस पचीस, राम हरी भजि लै जगदीश ॥२७॥

॥ इति श्री रसपचीसी संपूर्णम् ॥

॥ अथ लघुनामावली लिख्यते ॥

शिर धरि राधारमन पद भट्ट गोपाल सहाइ।
कोश धनंजय आदि औ कछुक नाम कहाइ ॥ १ ॥
नंददास नामावली अमरकोश के नाम।
इन तें जे वितरक्त औ लिखे हेत घनश्याम ॥ २ ॥
प्रथम मंगलाचरन में सुमिरौं शची कुमार।
अशुभ हरन सब शुभकरन प्रणऊँ बारंबार ॥ ३ ॥

कृष्ण नाम कू को गिनैं जिह्वा अखिल हराय।
तऊ ग्रन्थ की आदि में विंशत नाम गनाय ॥ ४ ॥

श्री कृष्ण नाम—

गोकुलचंद मुकुंद हरि मोहन माखनचोर।
वनमाली गोविंद विधु गिरधर स्यामकिशोर ॥ ५ ॥
केशव माधव मुरलीधर दामोदर गोपाल।
कुंजबिहारी चिकनिया पुरुषोत्तम नंदलाल ॥ ६ ॥

सुंदर नाम—

हृदय सौम्य मंजुल मधुर चारु ललति सुकुमार।
कम्र मनोज्ञ मनोहर रुग्युष्ट मंजु रससार ॥ ७ ॥

कमल नाम—

उत्पल राजिव कोकनद सितांभोज जलजात।
इंदीवर रु महोत्पल विंस प्रसून सतपात ॥ ८ ॥
सरसीरुह बनरुह बनज अबुंज बारिज सोई ॥ ९ ॥

ब्रह्मा नाम—

कः परमेष्ठी प्रजापति कमलासन हंसेश।
विरँच विधाता अत्मभू हिरण्गर्भ लोकेश ॥ १० ॥

महादेव नाम—

उग्र कर्पदी भूतपति कृतवासो सितकंठ।
इशान रुद्र मृत्यंजय रु वृषध्वज श्रीकंठ ॥ ११ ॥

सूर्य नाम—

अर्क अंशुमाली तपन आतप आदित जान।
दिनेश जंमा पूषन रु द्युमनि चंडकर भान ॥ १२ ॥

चंद्रमा नाम—

ग्लौ मृगांक आत्रेय हरि जीव उडप उडराज।
चंद्र चंद्रमा निशाकर तारापति द्विजराज ॥ १३ ॥

औसधीश सुरपेय खग रोहणिधव श्रीबंधु।
शशधर मयंक रु सिंधुसुत सारंग कुमुद जु बंधु ॥ १४ ॥

स्यामकार्त्तिक नाम— १८

सक्तिमातु गुह षटवदन सिखिवाहन षटमात।
क्रौंचभेदि गिरिजातनय महासैन्य सिवतात ॥ १५ ॥
कार्त्तिकेय सरवन जन्म स्कंद विशाख कुमार।
सेनांनी पावकतनय स्वामी रहत विकार ॥ १६ ॥

गरुड़ नाम— ७

गरुतमांनु तारक्ष अरु वैनतेय शकुनीश।
सुपरण अहिरिपु इंद्रजित जहाँ चढ़त जगदीश ॥ १७ ॥

स्वर्ग नाम— ७

स्वर्ग नाक स्व रु द्यौ त्रिदिव दिव रु त्रिविष्टप जान।
तहां वास कहिये अमर तिनपति इंद्र बखान ॥ १८ ॥

देवता नाम— १०

सुपर्व रु अदितिज दिवौकस दांनवारि रिपु सोइ।
कृतभुज अरिभव अमर्त्या सुप्ना आदित होइ ॥ १९ ॥

नक्षत्र ७ कीर्ति नाम ६—

धिष्ण्य तार नक्षत्र उड तारक अक्ष् छ भिरात।
साहस धानुक गुनावलि साधवाद जय ख्यात ॥ २० ॥

भीमसेन ५ उग्र नाम ६—

भीम वृकोदर वायुसुन गदापांणि रिपुसाल।
उल्वण दारुण घोर अरु उत्कट उग्र कराल ॥ २१ ॥

अर्जुन नाम ७—

सव्यसांच अरु स्वेतहय सब्दभेद नृपसेंन।
दैत्यरिपु रु पुनि कर्णरिपु कृष्णमित्र सुख देंन ॥ २२ ॥

बलवंत नाम १०—

बली मनस्वी तेजस्वी सूर तरस्वी जांन।
ऊर्ज प्रवणि भास्वर सुभट हरि बलवंत प्रधान ॥ २३ ॥

पंडित नाम ११—

मेघावी विद्वांनु अभिरूप विचिछ्छन सूर।
प्राज्ञा विदुष बुध वागमी आचारज दुःख दूर ॥ २४ ॥

समान नाम १२—

सदृस सजाति सवर्ण सम सदृकु सदृक्ष सधर्म्म।
तुल्य स्वरूप समांन पुनि उपमाभिध सम कर्म्म ॥ २५ ॥

मैत्री नाम ६—

सौहृद अरु सौहार्द पुनि हृदय सख्य कहि नांउ।
मैत्री सौरभ इष्टता मति सहास्य रस ठांउ ॥ २६ ॥

सीघ्र नाम १४—

अवलवंत रव जव चपल रंहस रय त्वर वाज।
सहसा सत्वर रभ तुरा तुरन बेग कहि साज ॥ २७ ॥

सोंने के नाम ११—

रुक्म रुद्र-रोदन कनक जांवूनद रु सुवर्ण।
हेम हिरण्य कलधौत हरि सातकुंभ पुनि स्वर्ण ॥ २८ ॥

घर के नाम २६—

गेह बेस्म आगार लय मंडप धिष्ण आस्पदंय।
मठ निकाय मंदिर अयन निकेतायतन पद ॥ २६ ॥
निवृति निसांत रु उद्धसित सरण पस्त्य आवास।
अवसथ वसति रु आवसति धाम कुंज सुखवास ॥३०॥

स्त्री नाम १२—

जोषा कुल्या गेहनी वांम लोचनां दार।
वधू भीरु जोपति चपल रामा महला नारि॥ ३१ ॥

भर्त्ता नाम —

प्रिय कामी कामुक रमण इष्ट प्राणपति कंत।
भर्त्ता प्रय प्रेयानु वरपौ धव प्रेष्ठ अनंत॥ ३२॥

उपाय नाम ७—

विक्लम अरु उत्साह भनि अध्यवसाह उद्योग।
अभिजोग रु व्यवसाय पुनि उद्यम करि हरिं लोग॥३३॥

समूह नाम १४—

कूट समाज संदोह घन व्रात जूथ सघात।
अखिल निवड सम दय विरस सन्वय औघ रुजात॥३४॥

उद्धत नाम ६—

उद्धत मानी स्तब्ध पुनि उज्जीवन सौंडीर।
दृप्ति अहंकृत गर्वत रु उध्धरु गर्व सरीर॥ ३५॥

शत्रु नाम १४—

वैर अराति अमित्र अरि द्विट सपत्न द्विष द्वेष।
रिपु दुर्ज्जन भानृव्य खल शत्रु अहित ए लेख॥ ३६॥

कर्कश नाम ६—

स्तब्ध कठिन कर्कश परुष अरु कठोर अश्शील।
दृढ़ काहल पुनि फल्गु जो होत पुरुष तांज सील॥३७॥

चोर नाम ६—

आगारिक तस्कर प्रणधि स्तेन निशाचर चोर।
प्रतिरोधक अरु गूढ़ नर हेरिक महाकठोर॥ ३८॥

दूत नाम ६—

सहस्राक्ष अपसर्प चर गूढ़परष पुनि चार।
प्रणधि दूत जासूस भनि वहुरि नाम हलकार॥ ३९॥

दूती नाम ७—

सपरसा रु अभिसारिका संभल स्वैरणि दूत।

पर-उपदेशनि कुट्टनी फिरै जु पर घर कूत ॥ ४० ॥

क्रिया विशेष और नाम होई—

मीन भ्रमर दोऊ प्रथम केत मौरवी अंत।
ए दोऊ क्रम सौं जुरैं नाम होइ रवि कंत ॥ ४१ ॥

पृथ्वी नाम ४—

अौनि ओकु गो गह्वरी धर जोरें गिर नाम।
पति जोरें राजा प्रगट रुह जोरे तरु नाम ॥ ४२ ॥

दिसा नाम ६—

हरित उदीचि प्रतीचि रु प्राची दक्षसुता ज ;
गजपालक अंवर जुरे दिग सौं नाम समाज ॥ ४३ ॥

समुद्र नाम १०—

वारिध अगम अमृतोद्भव पारावार पयोधि।
जलधि समुंध जलरास दधि नाम नदीपति सोधि ॥४४॥

विजुरी ५ मेघ नाम २—

विद्यु त संप वजाग वज चपला विजुरी भन्य।
पति जोरें सब मेघ गिन घनाघन रूपजन्य ॥ ४५ ॥

जल नाम—

नीर खीर चर जुर मकर द जुरै जलद उदोत।
ज: रुह जल जोरत कमला धि जुरें सागर होत ॥ ४६ ॥

पुत्र नाम ८—

तन नामन तेज जुरे बालक अर्भक होत।
प्रजा तोक उत्तान सय उद्वह दारक पोत ॥ ४७ ॥

भील नाम ७—

दुर्गमचर जेरें सबर दस्यु निषाद पुलिंद।
धनुक भिल्ल किरात ए चोर पाप के वृंद ॥ ४८ ॥

राजा नाम ६—

नर नांमन ते पति जुरें परि वृढ़ इन्न ईसान।
भूभुज धरनीकंत विभु नरपति ईस सुजान ॥ ४९ ॥

प्रत्यंचाधनुष नाम २—

प्रत्यंचा गुन मौरवी जेह पनिप कर हाथ।
पिनाक सरासन भ्रटिक दै तोरयौ श्री रघुनाथ ॥ ५० ॥

सेना ४ जु धर कल्यान नाम ६—

साधन दंड अनीक बल कदन संक्ति कहि देय।
स्वश्रेयस भावक भविक मंगल आनंद श्रेय ॥ ५१ ॥

मृग नाम १३—

कृष्णसार गोकर्ण रिस्प रोहत संवर न्यंकु।
अष्टापद रौहिस सरभ चवर प्रसत रुर अंक ॥ ५२ ॥

सिंह नाम १२—

वाघ रु हरिजच्छ केशरी द्वीपी व्याघ्र मृगारि।
सेर सूर भनि सारदुल पलभक्ष सिंघ गजारि ॥ ५३ ॥

हस्ती ६ सूड़ नाम ५—

हाथी गह्वर पुहकरी करभ करेणु वितुंड।
पुष्कर हस्त रु पदमकर काढ़यौ हरि गहि सुंड ॥ ५४ ॥

पर्वत २ सिखर ३ गुफा नाम ६—

सांनु मांन त्रिकूट कहि सिखर प्रस्थ औं सांन।
कंदर गह्वर कंदरा गुहा गुफा दरि जांन ॥ ५५ ॥

तिलक ४ सिर ३ भाल नाम २—

सन्नर अरु पुन्नाग कहि तिलक विशेषक नाम।
उतमांग कं मूरधा सेखर गोधिको ठांम ॥ ५६ ॥

मनुष्य ५ तट ३ नदी १ बज्र नाम १—

गोध लोग ना जन पुरुष बेला सीमा पाल।

नाम नदी एक आपगा व्रजहि उलका ज्वाल ॥ ५७ ॥

मित्र ३ फूल ३ चतुर ३ किरन नाम ३--

सहकारी सहक्कत मित उदगम प्रसव लतांन।
विग्य विशारद प्रगल्भ कहि दीधित पाद रु भांन ॥५८ ॥

फिरि विसेस नाम। सुवर्ण ३ सुंदरा ३ समूह ४ मृग नाम १—

सौंनौं भर्म्म सिलोदभव मुग्ध प्रसस्त अपी च।
संघ पंक्ति संतति बहुत करि सायल मृग बीच ॥ ५६ ॥

अटा ३ किंकणी २ रिष नाम ३—

महल अटारी धौरहर पादांगद पदमाल।
संजति वरनी संजमी ध्यान करें नंदलाल ॥ ६० ॥

शोभन ४ ज्ञान ३ सांच नाम ४—

साद विसद पुष्कल अमल ज्ञान रु बोध प्रबोध।
रित सत्य सूनृत सांच सौं मिलै कृष्ण हिय सोध ॥ ६१ ॥

कोमल ४ नूतन नाम ७—

रुज मृदु पेशल कोमल रु नूतन संप्रत नव्य।
नव नवीन प्रत्यग्र पुनि अग्रम लागम भव्य ॥ ६२ ॥

निरंतर ६ रहस्य ४ पुन्य नाम ३—

आत्यंतिक नित सर्वदा स्वासत सतत सदाय।
भिनक्ति गोप उसांस रह श्रेय सुकृत वृख आय ॥ ६३ ॥

संसार ७ हिम नाम ६—

भाव जगत भव संसरन संसृत जग संसार।
अवस्याय प्रालेय हिम हिमका तुहिन तुषार ॥ ६४ ॥

कस्तूरी ३ कपूर नाम ६—

मृगनाभिज कस्तूरिका मृगमद हिम घनसार।
हिमवालक कपूर ससि नाम सुगंध उदार ॥ ६५ ॥

अंगराग ४ छत्रा नाम २—

प्रसाधन रु कहि विलेपन समारंभु अनुराग।
आतपत्र पुनि छत्र भनि उष्ण निवारनि भाग ॥ ६६ ॥

जूरा ४ वेणी ३ अवस्था नाम ३—

केशपास धम्मिल पुनि जूटी जूरा होइ।
कवरी वेंनी कचबंधन प्राय दशं वय सोइ ॥ ६७ ॥

नासिका ३ कंध ३ कुच ३ उर नाम ३—

घ्रान गंधवह नासिका कंसिर अंशुभुज कंध।
वक्षोरुह वक्षोज कुच वक्ष्छस्थ उर फंद ॥ ६८ ॥

वचन ३ कुक्षि ३ अंगुली १ घुघरी १ जंघा ४ नितम्व नाम २—

वचन लपित वच तुंद कुक्षि साखा झांकृत जांन।
जांनु जघन जंघा रु जंघ श्रौनितंव वखांन ॥ ६९ ॥

झरोखा नाम७—

जातमार्ग वातायन रु समालंव पुन जाल।
झरोख गवाक्ष जनाश्रय रु राधे दिख गोपाल ॥ ७० ॥

आश्चर्य्य ५ भाग्य ५ आसन नाम ३—

विस्मय कौतुक चित्र कहि अद्भुत अचिरज दीठ।
धेय नियत विधि दैव दिष्ट विष्टर मल्लिका पीठ ॥ ७१ ॥

उच्च ६ संगी नाम ८—

उच्चा वाच उच्चित उनत उच्चे उच्च उतंग।
समं समा सारध अमा साक सत्र सह संग ॥ ७२ ॥

पुर ३ पुरी ३ देस नाम ५—

पत्तन पुटभेदन नगर पू पुरि पुरी वखांन।
जनपद विषय निवृत्तु पुनि राष्ट देश ये जांन ॥ ७३ ॥

खाई ४ कोटि ५ पौरि नाम १—

खेय पात परिखा परिधि विप्रसाल प्राकार।

घूरि कुट्टिम प्रतोलिका जो गोपुर आकार ॥ ७४ ॥

वार्ता ५ दृढ़ नाम ६—

ए वृत वदंती उद्‌त रु वार्त्ता पुनि वृतांत।
भृस कठोर अत्यंत दृढ़ अरु अत्यर्थ नितांत ॥ ७५ ॥

बड़े भाई ५ छोटे भाई नाम ५—

भ्रात सनाभि सहोदर रु अग्रज जेष्ठ सुजांन।
बंधु सगोत्र कनीय पुनि अवरज अनुज वखांन ॥ ७६ ॥

अस्त्र ४ पताका नाम ५—

अस्त्र सस्त्र आयुध अवर हेति पताका केत।
वैजयन्ति ध्वज चिन्ह सौ प्रगट सुभट कहि देत ॥ ७७ ॥

बकतर नाम १०—

कूर्प्पासक कंचक वर्म सँन्नाह रु तनत्रांन।
सिलह तनुत्र रु अंगवृत बकतर कवच हि जांन ॥७८॥

तरकस नाम ६—

उपासंग तूनीर कहि इषुधी तूण निषंग।
तरकस सर सब नांम घर कहि कमांन के संग ॥ ७६ ॥

प्रवाह ५ कीच नाम ४—

पूर प्रवाह रु जलउछा परीवाह जलडोल।
परिखतु कर्द्दम पंक किच ज जुरे कमल जु बोल ॥ ८० ॥

हंस नाम ६—

स्वेतपक्ष चक्रांग हंस मानसौकस मराल।
स्वेतगरत उतक्रोस कहि कुरर कादंव सुभाल ॥ ८१ ॥

चकवा नाम १३—

चक्रवाक प्रतिहार वक कंक चक्र कुम कोक।
सारस क्रौंच रथांग चक पुसकराह्व निशि सोक ॥ ८२ ॥

हंसनी ३ चिडा ३ कबूतर नाम ४—

हंसी बिरटा वारिली चिडा चटक कलविंक ।
पारावत कलरव भनों कपोत समादन रंक ॥ ८३ ॥

भैंस ३ गऊ ४ मठा ३ घृत नाम २

महिष दहेलिक भैंस भनि सुरभि गऊ गोंधेन ।
गोरस उदसित तक्र कहि सर्पि हयंगवि वैंन ॥ ८४ ॥

महावत २ अश्वार नाम ३

आधोरण अरु हस्तिपक ए मतंग रखवार ।
जाता जंता सादिगज ए तुरंग असवार ॥ ८५ ॥

ऊँट ६ राहु नाम ६

सीध्र करभ मय श्रंखलक कांमक उष्ट लवांन ।
मंथी राहु विदंतुद रु संधिज तम सुरभांन ॥ ८६ ॥

रीछ ७ विलया नाम ५

खडगी भल्ल भलूक अक्ष गंडक खडग रिछार ।
डोत विडाल रु आखुभुक विसदंशक मार्जार ॥ ८७ ॥

विछू ६ उलू नाम ६

शूककीट वृश्चक रु अलि द्रौण विछू बिसटूक ।
आराती वाय ऊलू पत्री सेंन उलूक ॥ ८८ ॥

सूकर नाम १२

स्तब्धरोंम भूदार किटि कोलि घ्रष्टि किरि आहि ।
घौणी पोत्री अधिकवल दंष्ट्री क्रोडि वराह ॥ ८९ ॥

कउवा नाम ११

सकृतप्रभा वलिभुक् करट वायस द्रोण अरिष्ट ।
कालकंट दात्यूह कग आत्मघोष्ट वलपुष्ट ॥ ९० ॥

स्वान नाम ९

कौलेयक मृगदंशक रु स्वामंडल सिंघ ग्राम ।

सारमेय पुनि परोगति जिह्वाप कूकर नाम ॥ ६१ ॥

कलंक ६ कृपण ४ नीच नाम ३

मलिन मलीमस किंजल्क लाछ्ण अधम अवद्य ।
अघु नास लाख कु लुब्ध पिशुन उत्तार दुखद्य ॥ ६२ ॥

ततकाल ६ ओछे ४ कूबरे नाम १

द्राकु सपदि अध्नय छ्ण पुनि संप्रति ततकाल ।
नीच ह्रस्व वामन खरव कुब्ज देह विहाल ॥ ६३ ॥

दुर्वल ८ सिष्य नाम ५

सांत छीन कृस हीन लटि जीरण सीरन छाम ।
मौढय सछ् छ दिछ् छत रु सिष अंतेवासी नाम ॥ ६४ ॥

ढील ६ वृद्ध नाम ४

तिमरजु पाथ विलंव पुनि सीतक ढील रु मंद ।
वारधीन अरु वारधिक अंत्य रु स्थविर संद ॥ ६५ ॥

प्रगट ४ व्याध ३ तीक्ष्ण नाम ४

सुष्ट विक्त स्फुट प्रगट लुब्ध अखेट रु व्याध ।
तिग्म तीक्ष खर तीव्र तजि सदा कृष्ण आराध ॥ ६६ ॥

सभा ४ सभापंडित २ खरिक ४ धीरज नाम २

संसद परिषद सद सभा पारीषद कहि सव्य ।
घोष गोष्ट बारे खिरक धीरज सौरन लव्य ॥ ६७ ॥

लालरंग ७ लालस्याममिश्रित नाम ३

ताम्र रक्त लोहित अरुण रोहित पाटल रात ।
धूम धूम्र धूमल्य मिलि स्याम लाल रंग जात ॥ ६८ ॥

जन्म नाम ७

भव उद्गम उद्भव जनन जनि उत्पति सब ग्राम ।
जन्म सफल जग जव भलो भजि मनमोहन स्याम ॥६९॥

सारध मधुरँग पुष्परस कुसुमसार मकरंद ।
रस के जानन हार इक भजिलें रे नंद नद ॥ १०० ॥
सो दोहा किय नाम बहु रामहरी नहि पार ।
भूल चूक कवि कर छिमा लघुनामावलि धार ॥ १०१ ॥
अब्द खड जुग च्यार तिस श्रावण शुक्ला तीज ।
रामहरी ब्रज वास करि सदा कृष्ण रंग भीज ॥ १०२ ॥
॥ इति श्री लघुनामावलि संपूर्णम् ॥

॥ श्री राधारमणो जयति ॥

॥ अथ लघुशब्दावलि लिख्यते ॥

अंघ्रि कमल राधारमन शचीसून गोपाल ।
श्री मुकंद वृंदा विपुन सुमिरि मिटै जंजाल ॥ १ ॥
अनेकार्थ नंददास की एक सब्द बहु अर्थ ।
अधिक सब्द लैं कोस तें दोहा किये समर्थ ॥ २ ॥

देव सब्द १२—

देव मेघ व्यौहार नृप क्रीडा पति रवि जीत ।
कांत मांद मद सुप्त गति हरिदेव हि करि प्रीत ॥ ३ ॥

सारग सब्द ३५—

ललित पवन घन तडित तृण अहि निशि चख नख काम ।
धन पुट कपि विष करट खर ओज कठ तिय ग्रांम ॥ ४ ॥
द्विज लव कच धनु अग्नि सर खंजन वीन मराल ।
मृगमद पय पिक कमल छबि है सारग नंदलाल ॥ ५ ॥

हरि सब्द ११—

हरिचंदन चातग किरण शुक्र सत्य शुक कील ।
दादुर तरु जम भय मिटै हरि भजि गहि मनशील ॥ ६ ॥

गो सब्द १५—

गो दिग रवि मृग सत दया अग्नि प्रसू चख बाल।
जग्य निगम सर चिन्ह गिर गो सुख भजि गोपाल ॥ ७ ॥

सुरभी सब्द ६—

सुरभी चंपक धीर पुनि मंत्री कंचन भाम।
बिल्व प्रसस्थ रु जायफल सुरभि ललित सो स्यांम ॥ ८ ॥

रस सब्द ६—

हर्ष तिक्त सिंगार-रस द्रवी सुगंध रु राग।
पारद वीरज कोकनद ए रस हरि रस पाग ॥ ६ ॥

गुण सब्द ६—

गुण प्रधांन इंद्रिय ललित सूर त्याग पुनि उष्ण।
नटी गवैया सीतल हि ए गुन गुनि श्री कृष्ण ॥ १० ॥

पुष्कर सब्द १५—

वाघ खड्ग फल भांड हृद प्रांत चक्र गद च्यार।
पय निमित्त गिर द्वीप तरु पुष्करमुख हरिसार ॥ ११ ॥

तीर्थ सब्द ११—

तीरथ वक्ता पात्र श्रुति मुनिवर पुन्य अरन्य।
प्रवचन सत्य रु सुचि सलिल तीरथ हरि ब्रज धन्य ॥१२॥

अर्थ सब्द ६—

अर्थ प्रयोजन वस्तु वसु भांव पदारथ काज।
अभिप्राय चेष्टा जनम अर्थ कृष्ण सौं साज ॥ १३ ॥

धर्म्म सब्द ८—

धर्म अहिंसा धनुष नय उपमा जज्ञ स्वभाव।
धर्म वेद पुन्य हि करें हरि भजि बहुरि न दाव ॥ १४ ॥

गुरु सब्द ५—

गुरु विद्या जेष्ठ रु पिता गुरू बृहस्पति नांम।

मंत्र देंन श्री गुरु बड़े जिन तें पैये स्यांम ॥ १५ ॥

सर सब्द ५—

सर सायक सर सरकंडे सर सरसी सर जीत ।
सर सम हरि की कौंन जग भजिले मोंहन मीत ॥ १६ ॥

शोम सब्द ७—

अमृत वल्ली ग्लौ कनक नृप जुगादि ए शोम ।
बार बार मन सोम्य गहि हरि भजि जग दुःख होंम ॥१७॥

सूर सब्द ६—

सूर विदुष भट सिंघ कटि अंध अग्नि रवि शूल ।
सूर उदर की जब मिटै भजिये हरि अनकूल ॥ १८ ॥

सुचि सब्द ८—

सुचि जु अग्नि द्विज मंत्रवर ब्रह्मचर्य सित ग्यांन ।
सुच असाढ़ सुचि सुध्ध जो भजन कृष्ण को जांन ॥१६॥

शृंग सब्द ५—

शृंग कहत सीग रु चतुर शृंग जु नाद प्रधान ।
शृंग सिखर गिरिराज कौ कर धारयौ भगवांन ॥ २० ॥

भंग सब्द ५—

भंग जु भंजन भांग पुनि किरण रु बीची नांम ।
भंग भजिवो जब मिटै कर हरिपद बिश्राम ॥ २१ ॥

हार सब्द ५—

हार कहत अध्वा रजत मांन पराजय हार ।
हरजु माला हाथ लै भजि मन नंद कुमार ॥ २२ ॥

वार सब्द ११—

वार बेर प्रतिवार कच द्वार जलन न्यौछार ।
कंठवार जल मूक सिसु कृष्ण सीस सिखि वार ॥ २३ ॥

प्रवाल सब्द ४—

प्रवाल जु मूगा बीन पुनि पल्लव कहत प्रवाल ।
है प्रवाल वलवान हरि जगत करैं प्रतिपाल ॥ २४ ॥

कीलाल सब्द ६—

कीलाल जु जल पय रुधिर भूषन अरु मकरंद ।
कीलाल जु जम त्रास तें छूटै भजि गोविंद ॥ २५ ॥

अक्ष सब्द ५—

अन्न कहत पासे नयन चमू बहेडे सोइ ।
अन्न चक्र हरि कर सदा रछया भक्ति हि होइ ॥ २६ ॥

कांडा सब्द ७—

कांड कहत पादप अखिल तुला वांन वल काल ।
कांड मूल सब के हरी जगत रच्यौ इक ख्याल ॥ २७ ॥

दंड सब्द ५—

दंड काठ को न्याय करदंड विधान रु तूल ।
दंड सरीर हि पाइकैं हरि न भजे मुख धूल ॥ २८ ॥

दान सब्द ८—

दान जु महूरत विवस्था समय उच्च खन नाम ॥ २९ ॥

पुंडरीक सब्द ४—

पुंडरीक पंकज नयन बसैं नंद के धाम ॥ ३० ॥

मंडल सब्द ५—

मंडल कहि भूभाग कू पिल्ला गोल रु वृंद ।
सर्वोपरि व्रजमंडल हि रहत जहाँ नँद नंद ॥ ३१ ॥

अंत सब्द—

अंत धर्म अंत निकट अंत पदारथ नाम ।
अंत सत्य मति धारिये जो चाहत हरि स्याम ॥ ३२ ॥

बहुल सब्द ५—

वहुल तर्क अतिसय वहुल वहुल प्रभूत अरु प्राय।
वहुल जु उपमा दीजिये ललित कुंवर नंदराय ॥ ३३ ॥

बालक सब्द ५—

वालक सिंधु सुगंध पुनि जूटी खेचर नाम।
वालक सिखु घर नंद कैं खेलत सुंदर स्याम ॥ ३४ ॥

पख सब्द ६—

पख हारथौ पांसू निपुन अर्थमास बल जांन।
पख जु पच्छ हरि राखिये जातें होइ कल्यांन ॥ ३५ ॥

कीनास सब्द ६—

कीनास जु पितहर अनुग दानव जम कीनास।
कीनास जु अघ क्रुपन्न कें हरि नव सावै वास ॥ ३६ ॥

पालास सब्द ५—

हरथौ रंग पल्लव वहुरि छाया ढाक पलास।
असुर पलास हि मार वहु व्रज हरि कीये विलास ॥३७॥

कदंव सब्द ४—

निवड कदंव विसेस पुनि निरगुन नर को नाम।
तरु कदंव चढ़ि कूद दह काली नाथ्यौ स्याम ॥ ३८ ॥

संकु सब्द ९—

शंकु स्वैर संख्या विवर कील रु मंद स्वछंद।
शंकु सकीरण दावानल वन लगि पी नंद नंद ॥ ३९ ॥

भ्रूण सब्द ६—

भ्रूण जु बालक द्विज कहत पक्षी भय चांडाल।
भ्रूण विकल संजोग तें रछाक श्री गोपाल ॥ ४० ॥

भूत सब्द ५—

भूत असुर अरु भूतजन पंचतत्व गति काल।

भूत प्रेत तें हरि बिना कौंन करै प्रतिपाल ॥ ४१ ॥

चक्र सब्द ५—

चक्र अखिल चकवा फिरन चक्र देश कौ नाम।
चक्र सुदर्शन हाथ हरि दुष्टन मारत स्याम॥ ४२ ॥

फणा सब्द ५—

फणा सींग अहि फण जटा मथिवो फणा कहाय।
फणा मंडली सखा संग मोंहन माखन खाय॥ ४३ ॥

वेला सब्द ४—

वेला तट वेला समय वेला पुनि आगार।
वेला पथ हरि अनुसरौ मिलै जु नंदकुमार॥ ४४ ॥

कला सब्द ६—

कला महल नट की कला ग्लौ घटि बड विज्ञांन।
कला अंग प्रभुता तजौ भजौ कृष्ण करि ध्यांन॥ ४५ ॥

गौरी सब्द ४—

गौरी गोरोचन सिवा गौरी हलदी नाम।
गौरी राग हि गाव तें वन तें आवत स्याम॥ ४६ ॥

स्यामा सब्द ५—

स्यामा कांगनि अस्म निशि पीपल फूल फिरंग।
स्यामा राधा नांम जप सहज मिलैं श्री रंग॥ ४७ ॥

सुधा सब्द ६—

सुधा कहत अवनी तडित इक भोजन धन धाय।
सुधा अभी ते अमर जग कृष्ण नांम गुन गाय॥ ४८ ॥

सुभा सब्द ४—

सुभा हरड थोहर सुभा सुभा कहत कल्यांन।
सुभा जु सोभावांन हरि और न दूजौ जांन॥ ४९ ॥

अमृत सब्द ६—

अमृत जल विष देवता जज्ञ सेस अनियास।
अमृत सुधा तें सरस है भजन कृष्ण ब्रजवास ॥ ५० ॥

अमर सब्द ७—

अमर स्वर्ग पवि तरुण तरु अमर जु नास गिलोय।
अमर देव के देव हरि प्रभु सम अमर न कोय ॥ ५१ ॥

अष्टापद सब्द ६—

अष्टापद सोंनों सरभ समय रसभ पुनि काल।
अष्टापद कृम जौंनि तें छुटवे मोहनलाल ॥ ५२ ॥

ललाम सब्द ६—

संख ललाम प्रभावनां ध्वज लांगूल ललाम।
सख प्रधान रु चिन्ह हय नृप के नृप भजि स्याम ॥५३॥

संख सब्द ५—

सं संसय मंगत सभा स कहिये रन भूमि।
संजु समय फिर है कहा भजौ कृष्ण रस भूंमि ॥ ५४ ॥

संपूर्ण सब्द ६—

संपूर्ण वैराग जस प्रभुता लछमी रूप।
संपूर्ण जु प्रबोध मन भजिये कृष्ण अनूप ॥ ५५ ॥

हंस ५ सार सब्द ५—

हंस धर्म तपसी अपन हंस नृपति महादेव।
सारक्रेंस वल वित्त वर सार जु थिर हरि देव ॥ ५६ ॥

कः ८ वसु सब्द ५—

कः पथ चित द्युत आत्म कः विधि तन सठ काल।
वसु नृप संकर रवि रतन वसु सोभा नंदलाल ॥ ५७ ॥

षं सब्द ६ विष सब्द ५—

षं पुर धरनी स्वर्ग सुख खेत्र ज्ञान खं नांम।

वृष वल मूसे सुद्र वर वृष गो टेरत स्यांम ॥ ५८ ॥

मंद ४ घन सव्द ४—

मंद अभागी रोगिया मंद जु सतत स्वछंद ।
घन मध्यम तालादि मद घन नृत्त त गोविंद ॥ ५६ ॥

वाल ५ ईडा सव्द ४—

बाल कांस अहि जल तुरा ब्रजबालहिं वसि स्याम ।
इडा वर्ष सुरभी सलिल इडा वचन हरि नाम ॥ ६० ॥

पल ४ जम सव्द ४—

पल जु घड़ी की साठ कहि मूरख उडद रु मांन ।
जम सनि जम छय जम नियम जम संजम हरि ध्यान ॥६१

स्पंदन ३ अर्ज्जुन सव्द ३—

स्पंदन पादप निगम पुनि स्पंदन कहिये देव ।
अर्ज्जुन केकी अरु कनक अर्ज्जुन दिसि हरि सेव ॥६२॥

वांम ३ खग सव्द ३—

वांम जु वनिता धनुष पुनि वांम जु कुच को नाम ।
खग ग्रह सायक ढूढवौ ढूढौ श्री घनस्याम ॥ ६३ ॥

मधु २ नाग २ सिंघ २ द्विज सव्द १—

मधु कहिये विटपी तिंया नग जु विलेसय भान ।
संघ श्रेष्ठ पुनि रास इक द्विज भय नागर पान ॥ ६४ ॥

कंवल २ कलभ २ पतंग २ कूट सव्द २—

कंवल कहि इंद्रिय कमल कलभ जु कौडी ऊँट ।
मंगल चंग पतंग कहि गेह रु घट ए कूट ॥ ६५ ॥

संवर २ कृतांत २ नाग २ कलाप सव्द २—

संकर मृग संवर कहत कृतांत अदिष्ट रु पाप ।
नाग मेघ अरु दीप सुत किंकणि निवड़ कलाप ॥ ६६ ॥

मंथी २ खर २ इला २ पोत सब्द २—

मंथी मथिवो प्रभाकर परसत वच व्यौहार।
इला वचन अरु गो कहत पोत करट आगार ॥ ६७ ॥

सिव २ बांन २ कवंदा २ दान सब्द २—

कील सुक्र कू शिव कहत चलन शुश्क फल वान।
लंव उदार कद व कहि पालन काटन दान ॥ ६८ ॥

व्रज ४ नंदन सब्द ३—

व्रज वृजमंडल व्रजषरिक व्रज अध्वा वृजव्रंद।
नंदन गिर नंदन स्वजन नंदन सिसु भजिनंद ॥ ६९ ॥

कूल ३ कौंन ३ तूल ३ द्रौण सब्द ३—

गोत्र निवड तम कुल कहत भैंस कोटि अहि कौंन।
नीप रुई सम तूल है करट उलू गिर द्रौंन ॥ ७० ॥

राम ३ प्रवर २ फटकर ३ बीज सब्द २—

रांम शुक्र स्वेत रु ललित प्रवर जु पथ वर रोग।
फटक आक रवि अर्क है बीज अन्त सुरभोग ॥७१॥

जीमूत ३ धव ३ राह ३ बिग्रह सब्द २—

जीमूत जु घन कील गिर धव कहि पति धौ भीरु।
राह विधु तंद संध पथ विग्रह जुद्ध शरीर ॥ ७२ ॥

ओक ३ मानस ३ अहि ३ शृगाल सब्द २—

घर गेह धन ओक है मानस द्यौ धन ताल।
राह सर्प रवि अहि कहत दानव स्याल सृगाल ॥७३॥

सर्प ३ पूग २ ससांक ३ अरिविंद ३—

सर्प कहत अहि जल चलन पूग सुपारी व्रंद।
है ससांक हिमकर कनक चक्र कमल अरविंद ॥७४॥

वाधा २ भूर २ नागराज २ रजत सब्द २—

दुख निषेद वाधांक हत वहुत कनक कहि भूर।
नागराज भनि सेस गज रजत स्वर्ण खजूर ॥ ७५ ॥

दात्यूह २ पूर २ गनिका २ आसा सब्द २—

दात्यूह जु चातग करट पूर सुनि कर प्रवाह ।
गनिका कहि वेस्या जु ही आसा दिसा रु चाह ॥७६॥

पंक २ अलि २ मानव २ नीलकंठ सब्द २—

कीच पाप ए पंक हैं अलि बिछू मधुचोर ।
मानव कहत जु धर्म नर नीलकंठ शिव मोर ॥७७॥

विभावसु २ जिह्मग: २ जटी २ मद सब्द २—

सब्द विभावसु अग्नि रवि जिह्मग सर्प रु बांन ।
जटी कहत महादेव वट मद कहि मदरा मांन ॥७ ॥

बक २ सहज २ रुधिर २ पाटल सब्द २—

बगुला चकवा बक कहत सहज स्वभाव तमाल ।
लोहू केसर रुधिर कहि पाटल स्वत रु लाल ॥ ७९ ॥

चंडकर २ शिलीमुख २ कपर्दी २ छीर सब्द २—

षड्ग सूर्य ए चंडकर शिलीमुख जु अलि तीर ।
वट संकर है कपर्दी पांनी दूध जु छीर ॥ ८० ॥

वात २ वारे २ कन्या २ सूत सब्द २—

वांत कहत शिशुक पवन वारे खिरक रु पूत ।
कन्या दिग रु कुमारिका सूत जु पारद सूत ॥८१॥

पाथ २ आत्मभू २ विजया २ यांम सब्द २—

पाथ कहत जल डील कू अत्मभू विधि कांम ।
हरड भाँग विजया कहत गांव निकर ए ग्रांम ॥८२॥

सूत्र २ वाज २ वैदेही २ अब्ज सब्द २—

वेद किंकणी सूत्र कहि सीघ्र रु पछी वाज ।
वैदेही सीता पिपल अब्ज कमल द्विजराज ॥८४॥

कृष्णा २ सर्करा २ नागर २ लांगूल सब्द २—

कृष्णा जमुना पीपलै शर्करा मिश्री धूल ।

सौठ चतुर नागर कहत पूछ रु हल लांगूल ॥ ८४ ॥

परजन्य २ शिषी २ संभु २ भांन सब्द २—

सक्र मेघ परजन्य है शिषी जु मोर कृसांन ।

वेधा संकर संभु कहि किरण रु दिनकर भांन ॥ ८५ ॥

ईंदीबर २ भीम २ परभृत्य २ कलरव सब्द २—

ईंदीबर है कमल अलि भीम जु सिव रिपु साल ।

परभृत कहि पिक बायसै कलरव पिक रु मराल ॥८६॥

मृदु २ ईसांन २ सविता: २ कांत सब्द २—

मृदु कहि कोमल कंढन कूराजा शिव ईसांन ।

सबिता कहि सूरज पिता कांत इंद्रवन जांन ॥८७॥

कीसक २ तार २ चिकुर २ मुग्ध सब्द २—

कपि रु हाड कीसक कहत मोती उडु ए तार ।

केस रु चंचल चिकुर है मुग्ध जु सठ सुकुमार ॥८८॥

रुक्म २ अब्द २ तलप २ राजा सब्द २—

रुक्म कहत रूपो कनक मेघ वर्ष कू अब्द ।

सज्या वनिता तलप कहि ग्लौ नृप राजा सब्द ॥८९॥

पुन्यजन २ धिष्ण २ परधि २ कांतार सब्द २—

सज्जन राक्षस पुन्यजन धिष्ण नषत आगार ।

वैडा घात हि है परधि वन रु इंद्र कांतार ॥ ९० ॥

कनक २ सक्र २ भेक २ चारु सब्द २—

हेम धतूरो कनक है सक्र अग्नि पुरहूत ।

मेघ रु मैडक भेक कहि चारु जु सुंदर दूत ॥९१॥

कलधूत २ केत २ वाडिवा २ हेत सब्द २—

कलधूत जु कंचन रजत धुजा गेह कहि केत ।

अग्नि विप्र ए वाडिवा हृदय निमित्त जु हेत ॥९२॥

पय २ तात २ वितांन २ रजनी सब्द २—

दूध रु पांनी पय कहत पुत्र पिता ए तात ।
चंदवा सून वितांत कहि रजनी हलदी रात ॥ ६३ ॥

नंदीवर २ समर २ तारकूट २ विधु सब्द २—

नदी वर जु गंगा उदधि समर अतन संग्रांम ।
तारकूट रूपो पितल विधु हिमकर घनस्यांम ॥ ६४ ॥

ससि २ कलकंद २ कमल सब्द २—

ससि कहि चंद कपूरकू पिक मराल कलकंद ।
कमल जु जलज बारिज बदन ध्यान करौ नंदनंद ॥६५॥
अखिल शव्द औ कोश वहु रांम हरी नहि छोर ।
भाषा समुझन कछु लिखे छिमय्यौ नंद किशोर ॥६६॥
अल्प आयु विद्या निवड सार काढि नर लेव ।
बाद बिवाद हि छांडि कैं भजिये श्री हरिदेव ॥ ६७ ॥
वेद रांम वसु कलानिधि संवत मास जु क्वार ।
शुक्ल पक्ष पुन्यौं सरद वृंदाबन गुरवार ॥ ६८ ॥
अति दुर्ल्लभ वृंदाविपुन गाय्यौ बेद पुरांन ।
देह पाय वसि भूलि जन कलपवृक्ष रसखांन ॥६९॥
सौ दोहा नाना अरथ लघु सव्दावलि नांम ।
राम हरी पढ़ि अर्थ लहि सुमिरो स्यांमा स्यांम ॥१००॥

इति श्रीलघु सव्दावलि संपूर्ण ।

प्रेमपत्री

सिध श्री सर्व पर हि श्री मथुरा शुभ धांम ।
उपमा पर अद्भुत ...ला नंद कुंवर वर नांम ॥१॥
करें सबैं व्रजकी वधू सासटांग प्रणांम ।
इते कुसल आनंद उत चाहत आठौ जांम ॥ २ ॥

जब तें हम तें बीछरे तब तें बिसरे कांम ।
तुम चरननि में मन रहैं दरसन आसा ग्रांस ॥३॥
चल ते तुम हम सों कह्यौ पत्र भेज हे खांम ।
फिरि क्यौं भूले जाइकैं चतुर चित्त अभिरांम ॥४॥
भाग पाय हम कूं मिले ज्यौं मोतिन के दांम ।
अब मन अकुलाय उठ्यौ जेठ तपन ज्यौं घाम ॥५॥
विरह ताप गिरिधरन हे दुःख सह्यौ सब वाम ।
मिलन लालसातें रह्यौ नांत रु जरतो चांम ॥ ६ ॥
सर्वोपर वृंदाविपन आनंद ठांम हि ठांम ।
हम कूं आनंद होइ जब आइ करौ विश्राम ॥७॥
पहलैं तौ हम हे सुखी भजन करत हे स्यांम ।
अब मन गति औरैं भई विरह बहत लै थांम ॥८॥
भाग तिहारे उबरी रचे कूवरी वांम ।
करि पुनीत जदुकुल सबैं विसरे सब ब्रज भांम ॥६॥
संवत रस त्रय वसु उडप माधव सुदि रवि रांम ।
रांम हरी लै पत्रिका पहुचें तुमरे ग्रांम ॥ १० ॥
॥ इति प्रेमपत्री सम्पूर्ण ॥

॥ अथ ध्यानरहसि कक्को लिख्यते ॥

श्री सोभा सब लाल की श्री सोभा है लाल ।
श्री सोभा वृंदाविपुन श्री सोभा बृज बाल ॥ १ ॥
क का कुवर किसोरी कमल पद करुनानिधि सुकुमार ।
कर मन तिन कौं आश्रय कौंन विलंब विचार ॥२॥
ख खा खोर साँकरी खिरक में खरी छबीली बाल ।
खौर सीस कर केसरी खरे छरे है लाल ॥ ३ ॥
गगा गोरी भोरी राधिके गौरागी सहचार ।
गुन गोविंद हि गावती गवनी गोकुल नार ॥ ४ ॥

घ घा घारथौं बृज घन घीर नैं घरे ईल नंदलाल।
करौ मनौ घर दामनी घन कच सुंदर बाल ॥ ५ ॥
न ना नैन चहौं नित्त मित कौ नवल नेह पहचान।
नई नई चित चातुरी निरखनि काहु न कान ॥ ६ ॥
च चा चातुरता की अवधि है चतुर सिरोमन मित्त।
चाव भरे अहर्निसि रहै चोरत सहचर चित्त ॥ ७ ॥
छ छा छैल छवीली लाडली छैल छवीलौ लाल।
छैल छैवीली सहचरी छैल छवीलौ ख्याल ॥ ८ ॥
ज जा जग ऊजयारी भामनी जगत ऊजारौं स्याम।
जग जीवन सब सहचरी जीवन बृज अभिराम ॥९॥
झ झा झूम झरोखन आय कै झमक दिखाई देत।
झुंड समाजन बीच में झुंन झुंन भूषन हेत ॥१०॥
न ना नैननि काजल जग मगौ निरख धरै कौ धीर।
नंदलाल आतुर अतन नहिं नसिहै तन पीर ॥११॥
ट टा टेरत हैं ब्रजगोपिका टेरै सुनी सुजान।
टेक राख अपनी सवै टेव लई नित कान ॥ १२ ॥
ठ ठा ठठकि ठठकि चल पुलन में ठाये रहैं छिन येक।
ठोर देख मनइ भावती ठठकति होत विवेक ॥१३॥
ड डा डरत रहै नित लालजू डारत है गरमाल।
डह डहान मुख निरख कै झरकौ झागत लाल ॥१४॥
ढ ढा ढरक मिलत मन भावती ढारत ही अनुराग।
ढार वन्यौं लडि लाल ने ढीले चितवन पाग ॥१५॥
ण णा रिण छाडौ तब नैं हरी रण छोड भयो नाम।
रिणी कीये बृजबाल सब झुणक झुणक बस स्याम ॥१६॥
त ता तर तमाल वेलिन में तरुन तरुनजा तीर।
तत थेई थेई नचै तरुनी श्री बलबीर ॥ १७ ॥

थ था थकत भये मुन सुर सवै थेइ थेइ गत सरसांन।
थाय लगत मृदंग हि थिर चर थिरता मांन ॥ १८ ॥
द दा दीप दीवारी राधिका दीपत भौंन संझार।
देख रीझ वर लाडलौ देत लड नी हार ॥ १९ ॥
ध धा धन की सोरी मान कैं धीर जना ठहराय।
धनी सु यातै आप हैं धनी भागता पाय ॥ २० ॥
न नां नैननि दरसन दीजिये निरखे ज्यौ ये नैंन।
नटत कहा हौ भावती ना चित इत में चैन ॥ २१ ॥
प पा प्रान पियारी मोहनी प्रान पियारो स्याम।
प्रान प्रिय सब सहचरी प्रान वृंदाबन धाम ॥ २२ ॥
फ फा फबी वेजंती सोहनी फूलत उर पर रंग।
फूल भरी इत भाँमनी फूलन आली संग ॥ २३ ॥
ब बा बडी बडाई लाल की वेन रहत नित पास।
वाजत सुध सब भावती बाहर होत प्रकास ॥ २४ ॥
भ भा भौं धनपु विच बांन तिल भौन ननन हि निसांन।
भौरें जात हि मारि कै भूलन फिर यै सांन ॥ २५ ॥
म मा मोर पंख सिर पैं धरैं मुर मुरनी की चाल।
माल हाल लखि भावती मो मन नैक न हाल ॥२६॥
य या या बन की सोभा अली या बन ही समतूल।
या कै पटतरु सुरन तरु रंक फूल अनकूल ॥ २७ ॥
र रा राधे राधे नाम कौं रटत रहैं सिव सेस।
राधा जे कहैं भाव सौ रहै न मुक्त तिन लेस ॥२८॥
ल ला लोचन कजल लालची लोनै सुख के कंद।
लखत रहे निस भौर ही लोभी गोकुलचंद ॥ २९ ॥
व वा वै कदंब वै जमुन जल वै गिरराज की ठौर।
वै वंसी वै सुर भरे वैं आलिन की रौर ॥ ३० ॥

स सा स्यांम सलोंने मोहन सोहनी बैन वनाय ।
सैंन करी तिन भावती सैन छाड घमडाय ॥ ३१ ॥
ष षा खरो छली छल छैल ते खरी छैल छल बाल ।
खरी अदायिन भर लखैं खरे करे सब हाल ॥ ३२ ॥
स सा सुंदर मंदर गुनन कौं सुंदर कला निधान ।
सुंदर सँग सुकुमार है सुभग सोवनी खांन ॥ ३३ ॥
ह हा हरत हिय प्रीतम प्रिया हरीराम मुसकाय ।
हेरत है आली तीनै हरैं हरैं ठहराय ॥ ३४ ॥
अखर बतीसन में कयो पिय प्यारी अनुराग ।
बाँच बिचारैं तिन कौ हरीराम वड भाग ॥ ३५ ॥
बरांखडी वनाय के रूपमंजरी बाल ।
कृपा करी श्री राधिका सुनि रींझै नँदलाल ॥ ३६ ॥
सवंत अष्टदस बीस है सावन भावन मान ।
कृष्णपच्छ दिन सप्तमी मंगल मंगल जान ॥ ३७ ॥

॥ इति ध्यानरहसि.ककौ संपूर्ण समाप्त ॥

गौडीयग्रन्थगौरवः—

ब्रजभाषा में प्रकाशित प्राचीन पुस्तकें—

१—गदाधरभट्टजी की वाणी
२—सूरदास मदनमोहनजी की वाणी
३—माधुरीवाणी (माधुरी जी कृता)
४—वल्लभरसिकजी की बाणी
५—गीतगोविन्दपद (श्रीरामरायजी कृत)
६—गीतगोविन्द (रसजानिवैष्णवदासजीकृत)
७—हरिलीला (ब्रह्मगोपालजीकृता)
८—श्रीचैतन्यचरितामृत (श्रीसुबलश्यामजीकृत)
९—वैष्णववन्दना (भक्तनामावली) (वृन्दाबनदासजीकृता)
१०—विलापकुसुमाञ्जलि (वृन्दाबनदासजीकृता)
११—प्रेमभक्तिचन्द्रिका (वृन्दाबनदासजीकृता)
१२—प्रियादासजी की ग्रंथावली
१३—गौराङ्गभूषणमञ्जावली (गौरगनदासजीकृता)
१४—राधारमणरससागर (मनोहरजीकृत)
१५—श्रीरामहरिग्रन्थावली (श्रीरामहरिजीकृता)

सानुवाद संस्कृतभाषा में—

१—अर्चाविधिः (संगृहित)
२—प्रेमसम्पुटः (श्रीविश्वनाथचक्रवर्त्तीजीकृत)
३—भक्तिरसतरंगिणी (श्रीनारायणभट्टजीकृता)
४—गोवर्द्धनशतक (श्रीविष्णुस्वामी संप्रदायाचार्य्य श्रीकेशवाचार्य्यकृत)
५—चैतन्यचन्द्रामृत और संगीतमाधव (श्रीप्रबोधानंदसरस्वतीजीकृत)
६—नित्यक्रियापद्धति (संगृहित)
७—ब्रजभक्तिविलास (श्रीनारायणभट्टजीकृत)

यह पुस्तक तथा प्रकाशित अन्य पुस्तकें मिलने का पता—

१—श्रीराम-निवास खेतान की दूकान सवामनशालग्राम जी मन्दिर के नीचे (लोई बाजार) वृन्दावन।

२—बाबा महन्त उद्धारणदास जी, कुसुमसरोवर, गवालियर–मन्दिर, राधाकुण्ड (मथुरा)

३—चन्द्रभान शर्मा, भारतीय पुस्तक भंडार, गुड़हाई बाजार, मथुरा।

४—श्रीरामदास शास्त्री जी, भक्तभारतकार्यालय, चारसम्प्रदायआश्रम, वृन्दावन।

मुद्रक—रामनारायण अग्रवाल, लोक साहित्य प्रेस, मथुरा।